महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015
e-paper:www.srushtiagronews.com

Posted atMalad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to15th issue)
18th to 19th for (15th to 30th Issue)

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 2 अंक - 02 | मुंबई, 16 फरवरी से 28 फरवरी 2014 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

भारतीय कृषि बीमा की वर्तमान स्थिति

कृषि वसंत से देश में दूसरी हरित क्रांति : राष्ट्रपति

नागपुर. राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने यहां कहा कि कृषि वसंत से देश में दूसरी हरित क्रांति की शुरूआत होगी। उन्होंने देश की सकल घरेलू विकास दर बढ़ाने के लिए कृषि व उद्योग सेक्टर को मिलकर काम करने का आह्वान भी किया। वे यहां राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी 'कृषि वसंत' के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। वर्धा मार्ग पर केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र परिसर में आयोजित राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी 'कृषि वसंत' का उद्घाटन भी राष्ट्रपति के हाथों ही हुआ। इस मौके पर उन्होंने कहा कि कृषि विकास का सीधा संबंध देश के विकास से है।

एक प्रतिशत कृषि विकास बढे पर 4 प्रतिशत रोजगार बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि कृषि वसंत के आयोजन से देश के कृषि विकास को गति मिलेगी। इस अवसर पर प्रदेश के राज्यपाल के. शंकरनारायणन, मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार, भारी उद्योग मंत्री प्रफुल्ल पटेल, मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, उपमुख्यमंत्री अजित पवार, प्रदेश के कृषि मंत्री राधाकृष्ण विखे पाटील, नागपुर के पालकमंत्री शिवाजीराव मोघे, संपर्क मंत्री अनिल देशमुख, राज्य के मुख्य सचिव जे.एस सहारिया आदि प्रमुखता से मंच पर उपस्थित थे। केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार, मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, प्रदेश के कृषि मंत्री राधाकृष्ण विखे पाटील ने भी अपने विचार रखे। केंद्रीय कृषि सचिव आशीष बहुगुणा ने प्रस्तावना रखी। प्रदर्शनी का आयोजन केंद्र सरकार के कृषि विभाग ने किया है, जिसमें महाराष्ट्र सरकार, भारतीय उद्योग महासंघ भी सहभागी हैं।

अनाज उत्पादन रहेगा 26.32 करोड़ टन:शरद पवार

मुंबई देश का खाद्यान्न उत्पादन इस साल 26.32 करोड़ टन के रिकार्ड स्तर पर पहुंच सकता है। कृषि मंत्री शरद पवार ने आज यह बात कही। इससे पहले खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन दो साल पहले 25.9 करोड़ टन रहा था। पवार ने यहां एक कृषि सम्मेलन में कहा, 'देश इस साल 26.32 करोड़ टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हासिल कर सकता है। यह दो साल पहले के 25.9 करोड़ टन से करीब 40 लाख टन अधिक होगा।' पिछले फसल वर्ष (जुलाई-जून) के दौरान खाद्यान्न उत्पादन मामूली घटकर 25.53 करोड़ टन रहा था। देश के कुछ हिस्सों में सूखे की वजह से खाद्यान्न उत्पादन घटा था। बेहतर मॉनसून और खरीफ (गर्मियों) व रबी (सर्दियों) फसलों की बुआई बढ? से इस साल खाद्यान्न उत्पादन की संभावनाएं बेहतर हुई हैं। पवार ने कृषि क्षेत्र की प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत इस समय दुनिया के शीर्ष चावल उत्पादक के रूप में उभरकर सामने आया है। वहीं गेहूं व कपास निर्यात के मामले में वह दूसरे स्थान पर है। उन्होंने बताया कि इसके अलावा भारत दूध व बागवानी फसलों के शीर्ष उत्पादक के रूप में उभरा है। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) ने हाल में जारी चालू वित्त वर्ष के अपने अग्रिम अनुमान में कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों की वृद्धि दर 4.6 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 1.4 फीसदी रही थी। पांच दिन के इस सम्मेलन 'कृषि वसंत' का आयोजन केंद्र और महाराष्ट्र ने उद्योग संगठन सीआईआई के साथ किया है। गेहूं व कपास के आयात पर निर्भर नहीं भारत केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा है कि

गेहूं और कपास के निर्यात से देश को 2.32 लाख करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई है।

कलावती के गांव के किसान ने की आत्महत्या

यवातमल (महाराष्ट्र) महाराष्ट्र के विदर्भ इलाके में आने वाले जाल्का गांव में एक कर्ज के बोझ तले दबे एक किसान ने कथित तौर पर झील में कूदकर आत्महत्या कर ली। यह वही गांव है, जहां कांग्रेस के उपाध्यक्ष राहुल गांधी कलावती नामक महिला से 2009 में मिले थे। कलावती के पति ने कर्ज से तंग आकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली थी। राहुल के इस दौरे को बहुत प्रचार मिला था।

सौर ऊर्जा से निकाला गन्ने का रस

नागपुर प्रदर्शनी में रॉकेट इंजीनियरिंग कॉरपोरेट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की गन्ने का रस निकालने वाली सोलर मशीन लोगों को अद्भुत लगी। सौर ऊर्जा से चलने वाली यह मशीन चंद सेकंड में गन्ने का रस

(शेष पृष्ठ २ पर)

अट्ठारह लाख किसानों को मिले सॉयल हेल्थ कार्ड

चंडीगढ़... हरियाणा कृषि विभाग द्वारा अब तक 17.87 लाख किसानों को सॉयल हेल्थ कार्ड (मृदा स्वास्थ्य) जारी किए जा चुके हैं। मृदा स्वास्थ्य से संबंधित आंकड़ों को ऑनलाइन उपलब्ध करवाया गया है, जिसे किसानों द्वारा कहीं से भी देखा एवं डाउनलोड किया जा सकता है। हरियाणा मिट्टी की उर्वरता की मैपिंग करने के मामले में देश का आदर्श राज्य बन गया है।

इसके अंतर्गत, प्रदेश में प्रत्येक गांव की मिट्टी की उर्वरता की मैपिंग की गई है तथा इससे संबंधित आंकड़ों को ऑनलाइन किया गया है। विभाग द्वारा मृदा उर्वरता की मैपिंग के अलावा मृदा की उर्वरता को बढ़ाने के लिए भी कई अहम कदम उठाए गए हैं। विभाग द्वारा मृदा उर्वरता को फिर से बहाल करने के लिए किसानों को सूक्ष्म पोषक तत्वों, जिंक सल्फेट, फैरट सल्फेट तथा मैगनीज सल्फेट पर 50 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जा रही है। क्षारीय मिट्टी में सुधार तथा सल्फर की कमी को पूरा करने के लिए किसानों को हरियाणा भूमि सुधार एवं विकास निगम द्वारा 60 प्रतिशत सब्सिडी दरों पर जिप्सम उपलब्ध करवाया जा रहा है। जिप्सम उपयोग के लिए 4,000 हैक्टेयर क्षेत्र को लक्षित रखा गया है तथा इस कार्य के लिए 12.90 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

मुंबई में होगी पेड़ों की गिनती!

मुंबई दो साल की देरी के बाद आखिरकार बीएमसी पेड़ों की गिनती शुरू करने जा रहे है। प्रशासन चर्चगेट में स्थित ओवल मैदान से गिनती शुरू करेगी। बीएमसी पहले बार पेड़ों की गिनती में जीपीएस तकनीक का इस्तेमाल कर रही है। पिछली बार पांच साल पहले पेड़ों की गिनती हुई थी तो मुंबई में कुल 19 लाख पेड़ थे। बीएमसी सरकारी इलाको, आरे कॉलोनी, संजय गांधी नैशनल पार्क और मैंग्रोव के पेड़ों को इस गिनती में शामिल नहीं करेगी।

तहसील व विकास खण्डस्तर पर संवादाताओं की आवश्यकता

मुंबई से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी कृषि पक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो उपरोक्त राज्य के विकास खंड एंवम तहसील स्तर पर संवादाता नियुक्त करने है. संवादाता बनने के लिए कृषि विकास की जानकारी एंवम ग्रामीण कृषि से सम्बन्धित होना अति आवश्यक है!कृषि विषय के जानकार व कृषि आदान से जुडे व्यक्तियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी !संवादाता की नियुक्ति कमीशन आधार पर होगी , संवादाता का मुख्य कार्य सृष्टि एग्रो के अधिक से अधिक सदस्य बनाना व विज्ञापन लेना रहेगा

अपने आसपास की घटनाओं पर नज़र रखना,व उसका समाचार सृष्टि एग्रो में भेजना प्रमुख दायित्व मे शामिल रहेगा अगर आप उपरोक्त शती से सहमत है तो सृष्टि एग्रो से जुडने के लिए सम्पर्क करें.

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
info@srushtiagronews.com

सौइलैस गार्डनिंग कॉन्फ्रेंस व मिनी एक्सपो. सफलतापूर्वक संपन्न

मुंबई सौइलैस गार्डनिंग कॉन्फ्रेंस व मिनी एक्सपो. सफलतापूर्वक संपन्न हुआ!ऐसे आयोजनों से आधुनिक कृषि को बढ़ावा मिलेगा यह कहना था आयोजक आदित्य चौधरी का, सृष्टी एग्रो ने सौइलैस गार्डनिंग कॉन्फ्रेंस व मिनी एक्सपो. में भाग लिया

मुफ्त बिजली के लिए किसान का हंगामा

नागपुर। कृषि प्रदर्शनी के समापन अवसर पर मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के भाषण के दौरान ही चंद्रपुर जिले के मांगुरली गांव के किसान काशीनाथ नामदेव बोरेकर ने मुफ्त बिजली की मांग को लेकर हंगामा किया। पहले तो पुलिस प्रशासन ने इसे हल्के में लिया, लेकिन सीएम के भाषण के साथ ही किसान काशीनाथ का पारा भी चढ़ता गया। उसे एक युवक का खुलकर समर्थन मिला और देखते ही देखते वहां उपस्थित किसानों ने काशीनाथ की हां में हां मिलाई। स्थिति को भांप पुलिस जैसे-जैसे करीब पहुंची, आवाज बुलंद होती रही। हंगामा बढ़ता देख पुलिस ने किसान को पकड़ा और बाहर कर दिया।

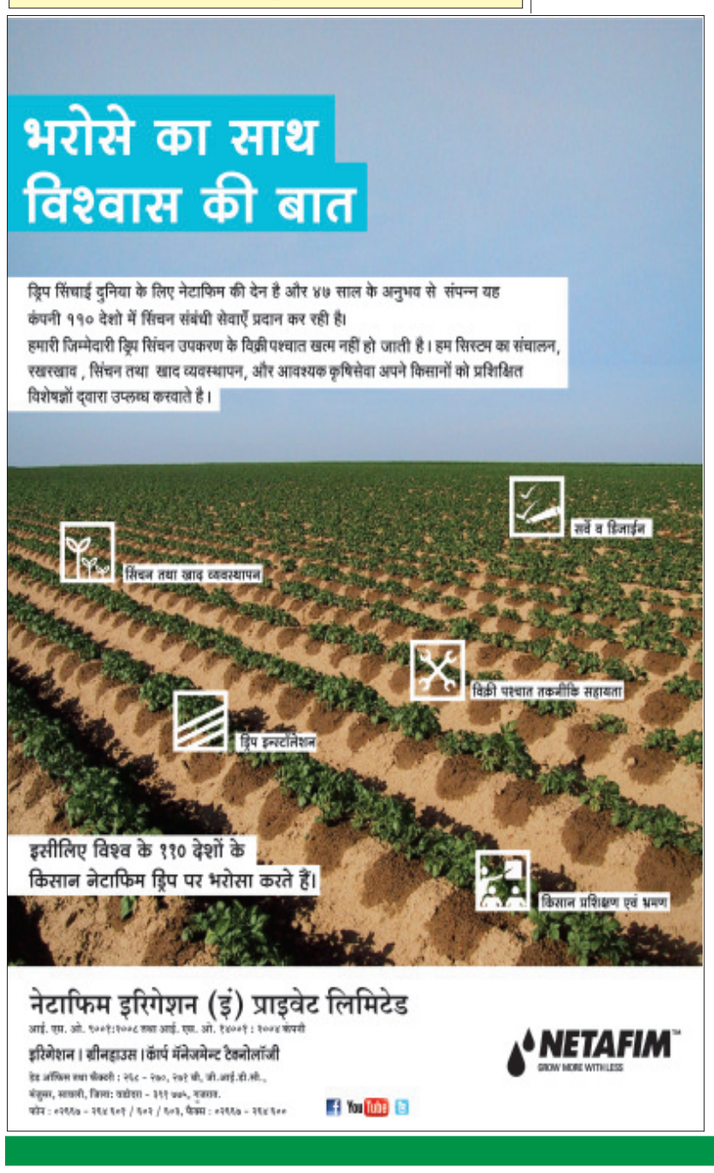

संपादकीय

भारतीय कृषि और चुनौती

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो न केवल इसलिए कि इससे देश की अधिकांश जनसंख्या को खाद्य की आपूर्ति होती है बल्कि इसलिए भी भारत की आधी से भी अधिक आबादी प्रत्यक्ष रूप से जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है ।ये एक अजीब विसंगति है कि जनसंख्या का इतना बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर करता है लेकिन कृषि में विकास की दर औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के मुकाबले कहीं कम है. पिछले कुछ सालों में कृषि क्षेत्र में विकास दर दो से तीन प्रतिशत के बीच रही है.

वर्ष 2002-03 में कृषि क्षेत्र में विकास दर शून्य से भी कम थी. 2003-04 में इसमें ज़बरदस्त उछाल आया और ये 10 फ़ीसदी हो गई लेकिन 2004-05 में विकास दर फिर लुढ़क गई और ऐसी लुढ़की कि 0.7 फ़ीसदी हो गई.

लेकिन सवाल ये उठता है कि उद्योग और सेवा क्षेत्रों के उलट भारत में कृषि क्षेत्र में विकास की रफ़्तार धीमी क्यों है.

अगर अतीत में थोड़ा झाँककर देखें तो 60 के दशक में जब हरित क्रांति आई तो बेहतर बीजों, खाद और नई तकनीक की बदौलत पैदावार में ज़बरदस्त बढ़ोत्तरी हुई.पैदावार बढ़ी, कृषि में विकास दर बढ़ी और इसका सीधा फ़ायदा किसानों और ग्रामीण लोगों को हुआ. देखते ही देखते भारत के खाद्य भंडार भरने लगे और भारत खाद्यान्नों का निर्यात करने लगा.हरित क्रांति के फ़ायदे भारत को 80 के दशक तक मिलते रहे. फिर 90 के दशक में शुरू हुआ आर्थिक सुधारों का दौर. इनके चलते उद्योगों में तो प्रगति हुई लेकिन कृषि क्षेत्र में एक ठहराव सा आ गया.इस ठहराव के लिए कई कारणों को जिम्मेदार माना जाता है- सिंचाई और ऋण सुविधाओं का अभाव, कृषि में निवेश की कमी, घटिया किस्म के बीज और फसलों में विविधिकरण न होना.समस्या को देखते हुए पिछले कुछ सालों से सरकार ने किसानों के लिए राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना और किसान क्रेडिट कार्ड योजना लागू की है ताकि ऋण की समस्या से निपटा जा सके.भारत में फसलों की पैदावार तो बढ़ी है लेकिन इनकी गुणवत्ता में कमी के चलते भारतीय फसलें अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाती हैं.फसलों की गुणवत्ता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती है नई तकनीक और उत्तम किस्म के बीजों का प्रयोग जो सस्ते दरों पर उपलब्ध हों.लेकिन ये सब तभी संभव है जब निरंतर शोध का काम होता रहे. तमाम आर्थिक चुनौतियों के बीच भारत ने लक्ष्य रखा है 10 फ़ीसदी की विकास दर हासिल करने का. लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहे जाने वाले कृषि क्षेत्र में विकास के बगैर ये लक्ष्य हासिल कर पाना भारत के लिए मुश्किल हो सकता है.

अगर उद्योगों में विकास के साथ-साथ भारत के खेत खलिहान भी हरे भरे हों, तो भारत समुचित और समग्र विकास का दावा कर सकता है- ऐसा विकास जिसका फ़ायदा सिर्फ शहरों को ही नहीं गाँवों-कस्बों तक भी पहुँचे.

सुरेश शर्मा

(प्रधान संपादक)

सौर ऊर्जा से निकाला...

निकाल देती है। इसके लिए मनुष्यश्रम की भी आवश्यकता नहीं है। आमतौर पर देखी जानी वाली मशीनों में एक बार में दो या तीन गन्ने ही डाले जा सकते हैं, लेकिन इस सोलर मशीन में 8-10 गन्नों को एक साथ डाला जा सकता है।

चीनी निर्यात पर सब्सिडी

नई दिल्ली, सरकार 40 लाख टन कच्ची चीनी के निर्यात पर 3,500 रुपये प्रति टन की सब्सिडी दे सकती है। इससे सरकारी खजाने पर 1,400 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। इस कदम का मकसद विदेशों में बिक्री को बढ़ावा देना और नकदी संकट से जूझ रहे उद्योग को प्रोत्साहन देना है। मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति (सीसीईए) ने इस सप्ताह निर्यात सब्सिडी पर दो बार फैसला टाला, क्योंकि कृषि मंत्री शरद पवार 3,500 रुपये प्रति टन की सब्सिडी देने के पक्ष में थे, जबकि खाद्य मंत्रालय ने 2,000 रुपये प्रति टन का प्रस्ताव किया था। मंत्रालयों के बीच मतभेदों के बीच पवार, वित्त मंत्री पी चिदंबरम और खाद्य मंत्री केवी थामस ने मुद्दे को सुलझाने के लिए आज बैठक की। अंततः 3,500 रुपये प्रति टन सब्सिडी देने पर पर सहमति बनी, जिसका राकंपा प्रमुख जोरदार वकालत कर रहे थे। खाद्य मंत्री केवी थॉमस ने बैठक के बाद कहा, 'बैठक में 3,500 रुपये सब्सिडी देने का निणर्य किया गया। अब मामला जल्दी ही सीसीईए के पास आएगा।' थॉमस ने कहा कि 40 लाख टन कच्ची चीनी के निर्यात पर 3,500 रुपये प्रति टन की सब्सिडी से सरकार पर 1,400 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

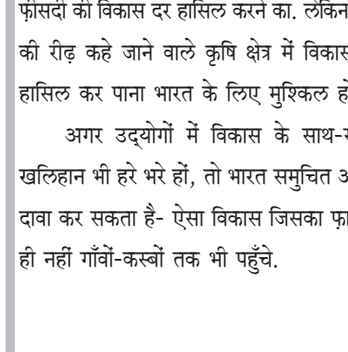

किसान मित्र राई–सरसों फसल की कटाई, गहाई और भंडारण प्रबंधन

डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार

सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

प्रश्न : राई–सरसों फसल की कटाई का लिए उपयुक्त समय क्या है ?

उत्तर : देश के विभिन्न भागों में तोरिया–सरसों एवं राई की फसलें अलग–अलग समयों पर पकती हैं। उत्तरी एवं मध्य भारत में तोरिया अंतर्वर्ती फसल के रूप में उगायी जाती है, जो दिसंबर में पक जाती है, तथा पूर्वी राज्यों (उड़ीसा, असम एवं पूर्वोत्तर राज्यों) में यह रबी की प्रमुख तिलहनी फसल के रूप में उगायी जाती है और इसकी कटाई फरवरी–मार्च में की जाती है। कश्मीर घाटी में भूरी सरसों मई तक काटी जाती है। प्रमुख राई–सरसों उत्पादक राज्यों जैसे राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में फसल फरवरी–मार्च तक काटी जाती है। अगेती अगस्त से सितम्बर अन्त तक बोयी गयी फसल नवंबर–दिसंबर में बोयी गयी फसल की तुलना में पकने में कम समय लेती है। तोरिया की कटाई सामान्यतः 90–95 दिन पर, एवं राई की 130–135 दिन पर की है। गोभी सरसों की कटाई 155–160 दिन पर एवं करन राई की कटाई 170–175 दिन में की जाती है।

प्रश्न : उपयुक्त समय पर कटाई के क्या लाभ हैं ?

उत्तरः राई–सरसों फसल के कटाई का समय, बोआई की तिथि, उगाई गई किस्म के प्रकार, प्रबंध की कार्य विधियाँ एवं खेती के स्थान पर निर्भर करेगा । उपयुक्त समय पर कटाई करने पर फलियों से बीजों के बिखरने, हरे बीज की समस्या तथा कम तेल अंश युक्त सिकुड़े हुए बीजों के कारण होने वाली हानि कम हो जाती हैं। बहुत जल्दी कटाई करने पर यदि तत्काल कृत्रिम रूप से सुखाया न जाए तो अधिक पर्णहरित अंश वाले एवं मुक्त वसा अम्लों से युक्त मृत बीजों की प्राप्ति हो सकती है। दूसरी ओर कटाई में देरी करने पर बीजों के छितरा जाने के कारण हानि हो सकती हैं। फसल को जल्दी तथा देरी से काटने पर 2–4 क्विंटल पैदावार कम हो जाती है। हरी फली की अवस्था मे कटाई करने से तेल की मात्रा में 3–4 प्रतिशत तक कमी हो जाती है।

प्रश्न : राई–सरसों फसल के कटाई की उचित अवस्था क्या है ?

उत्तरः राई–सरसों की फसल की कटाई के लिए सबसे उचित अवस्था तब होती है जब 75 प्रतिशत फलियाँ पीली पड़ जाती हैं और बीज का आर्द्रता अंश लगभग 30–35 प्रतिशत होता है। अधिकांश किस्मों में इस अवस्था के बाद बीज भार एवं तेल अंश में कोई वृद्वि नहीं होती है। इस अवस्था पर अंगुलियों के बीच दबाने पर अधिकांश बीज कठोर प्रतीत होते हैं और 30–40 प्रतिशत बीज हरे रंग से अपने प्राकृतिक रंग (भूरे या पीले) में परिवर्तित होना आरंभ कर देते हैं । कच्ची अवस्था पर कटाई करने पर श्वसन क्षतियाँ होने लगती हैं, जिसके फलस्वरूप बीज छोटे रह जाते हैं, तेल अंश में कमी हो जाती है और बीज के

अंकुरण क्षमता में भी काफी कमी हो जाती है। जब 75 प्रतिशत फलियाँ पीली हो जाती हैं तब तेल अंश भी सर्वाधिक होता है।

प्रश्न : राई–सरसों के कटाई के वक्त मौसम कैसा होना चाहिये ?

उत्तरः कटाई ऐसी अवधि में नहीं की जानी चाहिये जब वायु की आपेक्षित आर्द्रता बहुत अधिक हो या वर्षा हो रही हो। वायु की आपेक्षित आर्द्रता बीजों के आर्द्रता अंश को नियंत्रित करती है। सरसों की फसल में बिखराव रोकने के लिए फसल की कटाई सुबह करनी चाहिए क्योंकि रात की ओस से सुबह फलियाँ नम रहती हैं तथा बीज का बिखराव कम होता है।

प्रश्न : राई–सरसों फसल के कटाई, गहाई एवं ओसाई के लिए उपयुक्त तरीका एवं यंत्र क्या हैं ?

उत्तरः तोरिया–सरसों एवं राई की कटाई सामान्यतया दराँती से की जाती है। इन फसलों की कटाई करने के लिए बैल अथवा ट्रैक्टर चालित यांत्रिक हार्वेस्टर या रीपर भी उपलब्ध हैं । भारत में ये यंत्र लोकप्रिय नहीं हैं, क्योंकि यहाँ अधिकांश किसान सीमित साधनों से युक्त, लघु एवं सीमांत वर्ग के हैं । विकसित देशों में, तोरिया–सरसों एवं राई फसलों की कटाई के लिए ध ान्य फसलों के लिए प्रयुक्त हार्वेस्टर कंबाइन का उपयोग किया जाता है। सरसों की फसल की कटाई 30 से 40 सेन्टीमीटर ठूंठ छोडते हुए करनी चाहिए तथा तोरिया की कटाई 10 से 15 सेन्टीमीटर ठूंठ छोड कर करनी चाहिए।

परम्परागत तरीकों में अधिकतर फसल की गहाई लकड़ी की डंडी से बीज युक्त फलियों को पीटकर या अच्छी तरह से साफ किये गये खलिहान पर फैलाए हुए सूखे पौधों पर बैलों के पैरों से कुचलकर या ट्रैक्टर चलाकर की जाती है। ओसाई के लिए परम्परागत तरीकों से गहाई किये गये उत्पाद को कंधों की ऊँचाई तक ले जाकर टोकरियों से फर्श पर धीरे–ध ीरे गिराकर प्राकृतिक वायु ध ाराओं की सहायता से गहाई किये गये बीजों को भूसी से अलग किया जाता है। परन्तु इस कार्य हेतु हस्त चलित पंखे या बिजली या ट्रेक्टर चलित पंखों का प्रयोग भी किया जा सकता है। भूसी से अलग किये गये बीजों को छन्नी से छानकर बोरों में भर लिया जाता है।

गहाई हेतु बैल चलित गहाई मशीन या थ्रेशर का भी उपयोग किया जा सकता है। आजकल बाजार में बहु फसली गहाई यंत्र उपलब्ध है, जिनका तोरिया–सरसों एवं राई की गहाई के लिए बिना किसी जोखिम के उपयोग किया जा सकता है। फसल की गहाई थ्रैसर से करना ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि इससे बीज तथा भूसा अलग–अलग निकल जाते हैं।

प्रश्न : कटाई, गहाई और भंडारण के वक्त राई–सरसों के बीज में नमी की मात्रा क्या होनी चाहिए तथा सुरक्षित सरसों बीज के भंडारण के लिए किन–किन बातों का ध यान रखना चाहिए ?

उत्तर : कटाई के समय, बीज में नमी लगभग 30–35 प्रतिशत होनी चाहिए। काटी गयी फसल 5–7 दिन तक ध ूप में सूखने के बाद बीज की नमी में कमी आती है। सामान्यतया फसल की गहाई उस समय की जानी चाहिए जब बीज की नमी 12–20 प्रतिशत के बीच हो । फसल के बहुत अधिक सूख जाने पर (6–12 प्रतिशत आर्द्रता पर) बीजों के कुचलने एवं क्षति ग्रस्त होने का डर रहता है। सुरक्षित भंडारण के लिए बीजों में नमी 8 प्रतिशत होना चाहिए । गहाई के बाद बीजों को भण्डारण हेतु 8 प्रतिशत नमी के स्तर पर लाने के लिए धूप में लगभग एक सप्ताह तक सुखायें।

प्रश्न : राई–सरसों के बीज सुरक्षित भंडारण के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर : बीज एक जीवित सामग्री है, अतः वे भंडारण के दौरान श्वसन करते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड गैस, जल–वाष्प एवं उष्मा उत्पन्न करते हैं। यदि बीज ठंडे एवं शुष्क होते हैं तो श्वसन की दर घट जाती है। टूटे हुए बीजों की अधिक मात्रा से युक्त नमूनों में साबुत बीजों की अपेक्षा अधिक दर से श्वसन होता हुआ पाया गया है। कार्बन डाइऑक्साइड गैस, जल वाष्प एवं उष्मा का संचयन सूक्ष्म जीवीय सक्रियताओं को प्रोत्साहित करता है और इसके फलस्वरूप कवक एवं जीवाणु आक्रमण द्वारा बीज का जैविक अपघ्रास बढ़ जाता है। अच्छी भंडारण सुविधाओं की व्यवस्था करके हानिकारक कीटों से बचा जा सकता है।

भंडारण के दौरान बीज, तेल एवं खली की गुणवत्ता को तापमान तथा आपेक्षित आर्द्रता सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। बीजों को भंडार में रखने से पूर्व भंडार को पूर्ण रूप से साफ कर लेना चाहिए। भंडारण करने से पूर्व बोरों को 2–3 दिन तक धूप में सूखा लेना चाहिए जिससे उनमें उपस्थित कीट व फफूँदी मर जाए तथा उपस्थित नमी भी कम हो जाए। जहाँ तक संभव हो सकें बीजों को नये बोरों में ही भरना चाहिए। जिससे बीज में नमी की मात्रा न बढे। बीज भण्डार में बोरों को लकडी के तख्तों पर चट्टा बनाकर रखना चाहिए जिससे देखभाल करने में आसानी रहें। अगर तख्ते न हो तो पक्की ईटों के ऊपर बोरों को चट्टा बनाकर रखना चाहिए। बोरों को भण्डार की दीवारों से 8–12 इंच दूरी पर रखना चाहिए जिससे बरसात में बीजों में नमी की मात्रा न बढे क्योंकि बोरों के दीवारों के पास होने के कारण बीज नमी ग्रहण कर लेते हैं तथा नमी की अधिक मात्रा होने के कारण कभी–कभी बीज भण्डार में ही उग आते हैं तथा बचे बीज भी खराब हो जाते हैं। भण्डारण करने के बाद भण्डार हवा–रोधी कर देना चाहिए जिससे बाहर की हवा अन्दर न आ सकें। भंडार की समय–समय पर देखभाल करते रहना चाहिए।

अगर भण्डार में कोई कीट एवं फफूँदी दिखाई पडे तो तुरन्त कीट एवं फफूँदी नाशक दवा का प्रयोग करना चाहिए। यदि भंडारण के लिए 20 डिग्री सेन्टीग्रेड से नीचे का तापमान तथा 8 प्रतिशत आर्द्रता उपलब्ध रहे तो दो वर्ष तक भण्डारण से भी बीज की गुण व मात्रा में किसी प्रकार की कमी नहीं देखी गई है। अगर भंडार की दीवारों में कोई छेद तथा दरार हो तो उसको सीमेन्ट से बन्द कर देना चाहिए। अगर चूहों के बिल हो तो उनकों भी सीमेंन्ट से बन्द कर देना चाहिए।

सिट्रोनेला घास की अधिक उपज कैसे लें?

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा

औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग

अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

सी. सी. एस. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

इसको गैजनी भी कहा जाता है। इसकी दो प्रजातियाँ हैं – जावा सिट्रोनेला (Cymbopogon winterianus) और सीलोन सिट्रोनेला (Cymbopogon nardus)A जावा सिट्रोनेला के तेल में जिरेनियाल (Geranial) की मात्रा अधिक (12–18:) होने के कारण सीलोन सिट्रोनेला की अपेक्षा अधिक उत्तम माना जाता है। अतः जावा सिट्रोनेला की खेती कर्नाटक, आसाम, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, पश्चिमी बंगाल तथा उत्तरप्रदेश में की जाती है। यह पोयसी ;च्वंबममद्ध कुल की एक तना रहित बहुवर्षीय घास है जिसके पत्तों से तेल आसवित करके निकाला जाता है।

जावा सिट्रोनेला घास (सिम्बोपोगोन विन्टेरियानस)

सम्पूर्ण विश्व में लगभग 1800 टन सिट्रोनेला तेल का उत्पादन होता है जिसमें से लगभग 600 टन तेल का उत्पादन भारत में होता है।

उपयोगः साबुन तथा क्रीम निर्माण में सुगंध हेतू आडोमॉस, एंटीसेप्टीक क्रीम एवं अन्य सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण हेतू किया जाता है।

जलवायुः उष्ण और आर्द्र जलवायु इसके लिए उपयुक्त है। जहाँ 200–250 सैंमी. वर्षा प्रतिवर्ष हो।

भूमिः अच्छे पानी के निकास वाली बलुई दोमट तथा दोमट मिट्टी जिसका चभ मान 6–7.5 हो।

किस्मः बायो–13, मंजूषा, मंजरी एवं मंदाकिनी (CIMAP, लखनऊ जोर–3–1970 (जोरहट) विकसित किस्में हैं।

खेत की तैयारीः खेत भूरभूरा/बारीक तैयार किया हुआ तथा समतल होना चाहिये ताकि पानी ज्यादा समय तक खड़ा न रहे तथा एक समान लगे।

खादः इसके लिए 10 टन गोबर की गली सड़ी खाद प्रति एकड़ पर्याप्त है। प्रत्येक कटाई के बाद दो टन प्रति एकड़ गोबर की खाद खेत में मिलायें।

रोपाई की विधिः पुराने स्वस्थ पौधे द्वारा ली गई स्लिप्स को 60ग45 या 60ग60 सैं.मी. की दूरी पर जमीन की उर्वरा शक्ति के आधार पर लगायें। रोपाई के तुरन्त बाद पानी लगायें।

सिंचाईः पौधे की अच्छी बढ़त एवं पैदावार के लिए काफी नमी की जरूरत होती है अतः वर्षा की उपलब्धता के हिसाब से समय–2 पर पानी लगाए। प्रत्येक कटाई के बाद भी जल्दी ही पानी लगायें। कटाई लेने से 15 दिन पहले पानी लगाना बन्द कर दें।

निराई व गुड़ाईः आरम्भ में खरपतवार निकालने के लिए 2–3 गुड़ाई जल्दी–जल्दी करें तथा प्रत्येक कटाई के बाद खोदी अवश्य करें।

पौध संरक्षणः दीमक से बचाव के लिए रोपाई से पूर्व क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें तथा चूहों की रोकथाम के लिए चूहेमार दवा का प्रयोग करें। तना छेदक कीड़ो की रोकथाम के लिए कार्बोयूरान 3–जी का छिड़काव करें। लीफ ब्लाइट के लिए डायथेन एम–45 का 0.2: का छिड़काव करें।

कटाईः रोपाई के बाद प्रथम कटाई लगभग 4 महीने बाद तथा बाद की कटाईयां 2–3 मास के अन्तराल पर ली जानी चाहिये। अनुकूल परिस्थितियों में 4 कटाईयां ली जा सकती हैं जबकि सामान्य हालत में 3 कटाई ली जाती है। रोपाई के बाद 4 साल तक अच्छी पैदावार ली जा सकती है। फसल की कटाई जमीन से 15–20 सै. मी. ऊपर से करें।

तेल निकालनाः कटाई के बाद कुछ समय धूप लगाकर अन्य सगंध पौधों की तरह आसवन विधि द्वारा संयत्र से तेल निकाला जा सकता है।

तेल की मात्राः पहले साल में 2–3 कटाईयों में लगभग 40–50 लीटर तेल प्रति एकड़ तथा बाद में 4–5 कटाईयों में लगभग 60–70 लीटर प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है।

तेल का भावः गुणवत्ता के आधार पर औसतन 300–350 रुपये प्रति लीटर है। सिट्रोनेलाल तेल का मुख्य घटक (32–45:) है।

शुद्ध लाभः प्रथम वर्ष में लगभग 7000–8000 रूपये तथा बाद में 10000–15000 रूपये तक प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है।

अब लुढ़कते प्याज से निकले किसानों के आंसू

महाराष्ट्र जब प्याज की कीमतें आसमान छू रही थीं तब बेहतर मुनाफे की आस में महाराष्ट्र के प्याज किसान संतोष ढगे ने अपने खेतों में ज्यादा प्याज की बुआई की थी। लेकिन अब बदले हालात में उनके जैसे हजारों किसानों के समक्ष मुश्किलें खड़ी हो गई हैं। दरअसल प्याज की कीमतों में लगातार गिरावट देखी जा रही है जिससे किसानों को मुनाफा तो दूर लागत तक निकलने में पसीने बहाने पड़ रहे हैं। रिकॉर्ड पैदावार के कारण प्याज के भाव उत्पादन लागत से भी नीचे चले गए हैं, जिससे किसानों को भारी नुकसान हो रहा है। किसानों के लिए सबसे बड़ी परेशानी यह है कि वर्तमान मौसम में वे प्याज का भंडारण भी नहीं कर सकते हैं क्योंकि ऐसा करने से प्याज के सडे का खतरा है। इसलिए मजबूरी में उन्हें घाटे में प्याज बेचना पड़ रहा है। जानकारों के मुताबिक भारी आवक के बीच सुस्त निर्यात के कारण भी प्याज के दाम लगातार गिर रहे हैं। पिछले साल इन दिनों के मुकाबले प्याज आधे भाव पर बिक रहा है। बीते तीन माह के दौरान तो इसका भाव पांच गुना से भी अधिक गिर चुका है। महाराष्ट्र की लासलगांव मंडी में प्याज का मॉडल भाव (इस भाव पर 90 फीसदी बिक्री होती है) 735 रुपये, गुजरात की महुआ में 620 रुपये, राजस्थान की जयपुर में 750 रुपये और दिल्ली में 900 रुपये प्रति क्विंटल है। संतोष कहते हैं कि पिछले साल ऊंचे भाव से किसानों ने प्याज की खेती ज्यादा की जिससे उत्पादन भी बंपर हुआ है। ऐसे में किसानों को 600 से 800 रुपये क्विंटल का ही भाव मिल रहा है, जबकि उत्पादन लागत 800-900 रुपये प्रति क्विंटल है मंडियों में जोरदार आवक से प्याज के भाव लगातार इतने गिर चुके हैं कि मुनाफा तो दूर किसानों का खर्ची निकलना भी दूभर हो गया है। वहीं पिछले साल भाव बेतहाशा बढ? पर प्याज निर्यात पर बंदिश से चालू वित्त वर्ष में दिसंबर तक 9.87 लाख टन प्याज निर्यात हुआ है, जो पिछली समान अवधि में निर्यात हुए 14.04 लाख टन प्याज से करीब 30 फीसदी कम है।

गन्नामूल्य में मामूली बढ़त

नया एफआरपी 220 प्रति क्विंटल मूल्य निर्धारित किया गया 10 प्रति क्विंटल की बढ़त हुई गन्ना मूल्य में केंद्र सरकार ने अक्टूबर 2014 से शुरू होने वाले आगामी पेराई सीजन के लिए गन्ने के उचित एवं लाभकारी मूल्य (एफआरपी) में मामूली 10 रुपये की बढ़ोतरी कर भाव २२० रुपये प्रति क्विंटल तय किया है। आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) की गुरुवार को हुई बैठक में पेराई वर्ष 2014-15 के लिए गन्ने के एफआरपी में बढ़ोतरी की गई, लेकिन चीनी मिलों को 40 लाख टन रॉ-शुगर के निर्यात पर इंसेंटिव देने पर कोई फैसला नहीं हो सका। चीनी मिलें किसानों से एफआरसी से नीचे भाव पर गन्ने की खरीद नहीं कर सकती है, हालांकि उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तराखंड में राज्य सरकारें गन्ने का अलग से राज्य परामर्श मूल्य (एसएपी) तय करती है। चालू पेराई सीजन के लिए केंद्र सरकार ने गन्ने का एफआरपी 210 रुपये प्रति क्विंटल तय किया हुआ है जबकि उत्तर प्रदेश सरकार ने गन्ने का एसएपी 280 रुपये प्रति क्विंटल तय किया हुआ है। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) ने अक्टूबर से शुरू होने वाले नए पेराई सीजन के लिए गन्ने के एफआरपी में १० रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी का प्रस्ताव किया था। उधर खाद्य मंत्रालय ने भी सीएसीपी की सिफारिशों के आधार पर ही गन्ने का एसएपी 220 रुपये प्रति क्विंटल तय करने की सिफारिश की थी। सूत्रों के अनुसार खाद्य मंत्रालय और कृषि मंत्रालय की आपसी सहमति नहीं होने के कारण ही 40 लाख टन रॉ-शुगर के निर्यात पर चीनी मिलों को इंसेंटिव देने पर फैसला सीसीईए की बैठक में भी नहीं हो सका।

बढिय़ा बर्फबारी से बढ़ेगी सेब की लाली

जम्मू-कश्मीर महंगाई के इस दौर में सेब आपकी जेब को थोड़ी राहत दे सकता है। बेहतर पैदावार से इस बार सेब की कीमतें कम रह सकती हैं। सेब उत्पादक क्षेत्रों में इस बार अच्छी बर्फबारी होने सेब को फायदा पहुंच रहा है, जिससे सेब की पैदावार बढ? की संभावना है। मुख्य सेब उत्पादक राज्य जम्मू-कश्मीर में इस बार पिछले साल से भी ज्यादा बर्फबारी हुई है। हालांकि हिमाचल प्रदेश के कुछ सेब उत्पादक इलाकों में पिछले साल से कम बर्फ पड़ी है। लेकिन सेब किसानों का कहना है कि मौसम सेब के अनुकूल है। पिछले साल कश्मीर में 12 करोड़ पेटी और हिमाचल में ३ करोड़ पेटी (प्रति पेटी 18 से 20 किलोग्राम) सेब हुआ था। इन दोनों राज्यों के अलावा उत्तराखंड में भी सेब का उत्पादन होता है। पिछले साल त्रासदी के कारण उत्तराखंड में सेब की लगभग पूरी फसल बर्बाद हो गई थी लेकिन इस बार कुछ सुधार हो सकता है।

चना मजबूत

चने की बिगड़ती हालत को संभालने के लिए सरकारी हाथ बढ? की संभावनाओं को देखते हुए वायदा बाजार में चने के कद्रदान खड़े होने लगे हैं। कमजोर मांग की वजह से चना लंबे समय से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से नीचे बिक रहा है, लेकिन चुनाव नजदीक होने के कारण सरकार मंडियों में चने की खरीद जल्द शुरू करेगी, जिसका फैसला कृषि मंत्रालय में होने वाली सभी राज्यों के कृषि सचिवों की बैठक में लिए जाने की संभावना है। दलहन फसलों को प्रोत्साहन देने के लिए कृषि मंत्रालय चने का एमएसपी बढ़ाकर 3,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया है। लेकिन इस साल कभी भी एमएसपी के ऊपर नहीं गई हैं। पिछले एक साल में चने के दाम करीब 25 फीसदी लुढ़क चुके हैं। चना उत्पादक प्रमुख राज्य महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के किसानों में सरकारी नीतियों को लेकर नाराजगी है, जिसे सरकार चुनाव से पहले खत्म करना चाहती है। कारोबारियों की मानी जाए तो सरकार इन राज्यों में चने की खरीदारी अगले सप्ताह से शुरू कर सकती है।

कॉयर एक्सपो में 150 करोड़ के निर्यात सौदे

केरल.. पिछले वित्त वर्ष में 1,166 करोड़ रुपये के कॉयर उत्पादों का निर्यात कॉयर एक्सपो-2014 बायर-सेलर मीट में कॉयर (नारियल के रेशे) से बने उत्पादों को अच्छा रिस्पांस मिला है। इस दौरान 150 करोड़ रुपये के निर्यात सौदे हुए। केरल के आल्पुषा में चल रहे कॉयर एक्सपो के चौथे संस्करण में बायर-सेलर मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विदेशी खरीददारों के साथ घरेलू निर्माता कंपनियों ने तकरीबन 150 करोड़ रुपये के सौदे किए। इस बिजनेस मीट का उद्घाटन राज्य के राजस्व एवं कॉयर मंत्री अधूर प्रकाश ने किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य कॉयर उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने के साथ-साथ उत्तम क्वालिटी के उत्पाद तैयार करना भी है, ताकि विदेशी आयातकों की मांग निरंतर बढ़े, जिससे घरेलू उद्योग को लाभ पहुंचे।

नई फसल के गेहूं निर्यात के लिए सौदे शुरू

घरेलू कारोबार : दक्षिण भारतीय मिलों ने यूपी से खरीद सौदे किए 1600-1625 रुपये प्रति क्विंटल पर कांडला बंदरगाह पहुंच के खरीद सौदे हुए 80,000 टन नई फसल के गेहूं के सौदे किए हैं फिलहाल निर्यातकों ने 75,000 टन के खरीद सौदे दक्षिण भारत की फ्लोर मिलों ने किए गेहूं की आने वाली नई फसल के मार्च-अप्रैल डिलीवरी के निर्यात सौदे शुरू हो गए हैं। निर्यातक कंपनियों ने गुजरात और उत्तर प्रदेश से कांडला बंदरगाह पहुंच गेहूं के खरीद सौदे 1,600 से 1,625 रुपये प्रति क्विंटल की दर से करीब 75,000 से 80,000 टन के निर्यात सौदे किए हैं। दक्षिण भारत की रोलर फ्लोर मिलों ने भी उत्तर प्रदेश से अप्रैल डिलीवरी का करीब 75,000 टन गेहूं खरीदा है। निर्यातक कंपनियों ने गेहूं की आने वाली नई फसल के निर्यात सौदे शुरू कर दिए हैं। आईटीसी के साथ ही दो अन्य नामी कंपनियों ने गुजरात से मार्च डिलवरी के करीब 40,000 टन गेहूं के निर्यात सौदे किए हैं। उत्तर प्रदेश से भी करीब 35,000-40,000 टन गेहूं के निर्यात सौदे 1,600 से 1,625 रुपये प्रति क्विंटल कांडला बंदरगाह पहुंच किए है। उत्तर प्रदेश से गेहूं की खरीद 1,440 रुपये प्रति क्विंटल रैक लोडिंग के आधार पर की गई है। उधर दक्षिण भारत की फ्लोर मिलों ने भी उत्तर प्रदेश से अप्रैल डिलीवरी के करीब तीन रैकों के सौदे किए हैं। एम संस इंटरनेशनल लिमिटेड के सलाहकार टी पी एस नारंग ने बताया कि मई-जून में रूस और यूक्रेन में गेहूं की आने वाली फसल के आधार पर विश्व बाजार में गेहूं के दाम तय होंगे। हालांकि चालू रबी में गेहूं की घरेलू पैदावार ज्यादा होने का अनुमान है, ऐसे में आगामी दिनों में निर्यात सौदे बढे का अनुमान है। केंद्र सरकार ने गेहूं निर्यात के लिए न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) 260 डॉलर प्रति टन तय किया हुआ है तथा इस समय सार्वजनिक कंपनियां २७५ डॉलर प्रति टन से नीचे की निविदा को स्वीकार नहीं कर रही हैं। यह सही है कि निर्यातकों के साथ ही स्टॉकिस्टों की अच्छी मांग से गेहूं उत्पादकों को दाम अच्छा मिलेगा। गेहूं के थोक कारोबारी राधेश्याम गुप्ता ने बताया कि केंद्र सरकार ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमईपी) 1,400 रुपये प्रति क्विंटल तय हुआ है। मध्य प्रदेश और राजस्थान की राज्य सरकारें किसानों को अलग से 100 रुपये प्रति क्विंटल का बोनस दे सकती है

गेहूं में बिकवाली से कमा सकते हैं मुनाफा

नई दिल्ली... बुवाई क्षेत्रफल में हुई बढ़ोतरी के साथ अनुकूल मौसम से चालू रबी में गेहूं की रिकॉर्ड पैदावार होने का अनुमान है। गेहूं की बुवाई चालू रबी में 5.7 फीसदी बढ़कर 315.32 लाख हैक्टेयर में हुई है। मार्च-अप्रैल महीने में उत्पादक मंडियों में गेहूं की नई फसल की आवक शुरू हो जायेगी। हालांकि निवेशकों की खरीद से एनसीडीईएक्स पर मार्च महीने के गेहूं के वायदा अनुबंध में पिछले पांच दिनों में २ फीसदी की तेजी ही आई है लेकिन बंपर उत्पादन को देखते हुए मार्च में गेहूं की मौजूदा कीमतों में 10 से 12 फीसदी की गिरावट आने की संभावना है। एनसीडीईएक्स पर मार्च महीने के गेहूं के वायदा अनुबंध में पिछले पांच दिनों में २ फीसदी की तेजी आकर शुक्रवार को भाव 1,612 रुपये प्रति क्विंटल हो गए जबकि 3 फरवरी को मार्च महीने के वायदा अनुबंध में इसके भाव 1,579 रुपये प्रति क्विंटल थे। एग्री विशेषक अभय लाखवान ने बताया कि चालू रबी में गेहूं के बुवाई क्षेत्रफल में बढ़ोतरी हुई ही है, साथ ही अभी तक मौसम भी फसल के अनुकूल बना हुआ है। ऐसे में आगामी दिनों में नई फसल की आवक बनने के बाद गेहूं की मौजूदा कीमतों में गिरावट की ही संभावना है। इसलिए निवेशक मौजूदा कीमतों पर बिकवाली करके मुनाफा कमा सकते हैं। श्री बालाजी फूड प्रोडक्ट कंपनी के प्रबंधक संदीप बंसल ने बताया कि केंद्र सरकार ने रबी विपणन सीजन 2014-15 के लिए गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 1,400 रुपये प्रति क्विंटल तय किया हुआ है जबकि खुले बाजार में गेहूं का स्टॉक नहीं होने के कारण रोलर फ्लोर मिलें गेहूं की खरीद भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के गोदामों से ही कर रही हैं। मार्च महीने में गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान में नए गेहूं की आवक शुरू हो जायेगी, जबकि अप्रैल में पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में नई फसल की आवक बनेगी।

रिकॉर्ड पैदावार से निकलेगा आलू का दम

कुछ समय पहले तक सातवें आसमान पर रहीं आलू की कीमतों से परेशान उपभोक्ताओं को अब इससे राहत मिलने के आसार है। पिछले साल आलू की कीमतों में तेजी को देखते हुए किसानों ने इस बार ज्यादा बुआई की है, जिससे उत्पादन बढे की उम्मीद है। मौसम भी आलू की फसल के लिए अनुकूल है, जिससे वर्ष 2013-14 के दौरान आलू की रिकॉर्ड पैदावार होने का अनुमान है। लिहाजा इस साल आलू के भाव भी नरम रहने की संभावना है। पैदावार बढ? की उम्मीद में आलू के भाव अभी से गिरने शुरू हो चुके है। जानकारों का कहना है कि आगे कीमतों में और नरमी के आसार है। कि पिछले साल बुआई के समय आलू महंगा था, जिससे किसानों इसकी बुआई ज्यादा की। इसके अलावा मौसम भी अनुकूल रहने से वर्ष 2013-14 के दौरान देश में रिकॉर्ड 464.43 लाख टन आलू के उत्पादन का अनुमान है जबकि वर्ष 2012-13 में 453.43 लाख टन आलू पैदा हुआ था। जानकारों का कहना है कि आलू के उत्पादन में सबसे ज्यादा २४ फीसदी बढ़ोतरी ओडिशा में होने का अनुमान है। महाराष्ट्र में 20 फीसदी, हरियाणा में 9 फीसदी, कर्नाटक व मध्य प्रदेश में 5 फीसदी और मुख्य उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में 4 फीसदी पैदावार बढे का अनुमान है। उत्तर प्रदेश के आलू किसान बटुकनारायण मिश्रा भी मानते है कि बेहतर भाव मिलने से किसानों ने ज्यादा आलू लगाया है। आजादपुर मंडी के आलू कारोबारी त्रिलोकचंद शर्मा ने कहा कि अच्छी पैदावार की उम्मीद से इस साल आलू के दाम कम ही रहेंगे। शर्मा ने कहा कि पैदावार बढ? की संभावना से कीमतों पर अभी से दबाव देखा जा रहा है। एनएचआरडीएफ के आंकड़ों के मुताबिक इस साल दिल्ली में आलू के भाव 800 से 1400 रुपये प्रति क्विंटल से घटकर 560 से 1080 रुपये, आगरा में 800 से 900 रुपये से घटकर 650 से 725 रुपये प्रति क्विंटल रह गए है। सस्ते प्याज से किसान हलाकान कुछ समय पहले तक ग्राहकों को रुला रहा प्याज अब किसानों के आंसू निकाल रहा है। प्याज के भाव में आ रही गिरावट का आलम यह है कि एशिया में प्याज की दो सबसे बड़ी मंडी पिंपलगांव और लासलगांव में किसान प्याज सड़कों पर फेंकने की तैयारी कर रहे हैं। एनएचआरडीएफ के अनुसार लासलगांव मंडी में प्याज के भाव 30 फीसदी घटकर 6.25 रुपये प्रति किलोग्राम रह गए जो १ फरवरी को 8.75 रुपये प्रति किलोग्राम थे। पिंपलगांव में भी प्याज का भाव ८ रुपये प्रति किलोग्राम से घटकर 5.50 रुपये प्रति किलोग्राम रह गया है। पिछले साल अक्टूबर में प्याज 60 से 80 रुपये प्रति किलो के भाव पर बिक रहा था। एपीएमसी पिंपलगांव के निदेशक अतुल शाह ने कहा कि ऊंचे दाम के कारण किसानों ने खूब बुआई की थी लेकिन दाम इतने घट गए है कि उन्हें अपना माल फें कना पड़ रहा है।

केरल सरकार करेगी रबर की खरीद

केरल सरकार खुले बाजार में रबर की कीमतों में स्थिरता लाने के लिए उत्पादकों से इसकी खरीद करेगी। यह घोषणा राज्य के मुख्यमंत्री उम्मेन चांडी ने आज राज्य विधानसभा में की। रबर की कीमतों में लगातार गिरावट के मसले पर विपक्षी सदस्य के सुरेश कुरूप द्वारा रखे गए एक प्रस्ताव के जवाब में उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने केंद्र से इसके लिए वित्तीय सहायता मांगी है। राज्य सरकार ने वाणिज्य मंत्रालय से भी रबर खरीदने का आग्रह किया है, ताकि कीमतों में स्थिरता आ सके। उन्होंने कहा कि मंत्रालय गंभीरता से इस पर विचार कर रहा है। खरीद से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के लिए सरकार एक उच्च स्तरीय बैठक बुलाएगी। उन्होंने कहा कि वैश्विक बाजार की तर्ज पर रबर की स्थानीय कीमतों में भी गिरावट का रुझान बना हुआ है। लेकिन फिर भी केरल में रबर के दाम अंतरराष्ट्रीय बाजार से ज्यादा है। सुरेश कुरूप ने आरोप लगाया कि शुल्क मुक्त रास्तों से आयात और कम शुल्क पर आयात की वजह से बाजार बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इसके बावजूद केंद्र सरकार इस मसले पर कोई कदम नहीं उठा रही है।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Bio Insecticide
- Mixture
- Bactericide
- Secondary Nutrients
- Wetting Agent
- Growth Promoters
- Zyme
- Bio Stimulants
- Tonic
- Bio Fungicide

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

मसालों के निर्यात में २८ फीसदी इजाफा

नई दिल्ली, भारत से मसालों का निर्यात चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से नवंबर के दौरान पिछले साल की इसी अवधि की तुलना में मात्रा के लिहाज से 28 फीसदी, रुपये में कीमत के लिहाज से 46 फीसदी और डॉलर में 32 फीसदी बढ़ा है। वर्ष 2013 में अप्रैल से नवंबर के दौरान मसालों के निर्यात की कीमत 8377.20 करोड़ रुपये (1,39.65 करोड़ डॉलर) और मात्रा 5,08,555 टन दर्ज की गई है। मिंट ऑयल, मेंथॉल और मेंथॉल क्रिस्टल का निर्यात में अहम योगदान रहा है। इनका निर्यात 15,850 टन रहा है, जिससे 1975.17 करोड़ रुपये की आमदनी हुई। अगर इसकी तुलना पिछले साल की समान अवधि से की जाए तो इनके निर्यात में मात्रात्मक लिहाज से 129 Hफीसदी और कीमत के लिहाज से ६२ फीसदी बढ़ोतरी हुई है। पिछले साल की इसी अवधि में इनका निर्यात 6,916 टन रहा था, जिससे 1,223 करोड़ रुपये की आमदनी हुई थी। इनसे होने वाली आमदनी मिर्च से थोड़ी ही कम रही। अप्रैल से नवंबर, २०१२ के दौरान मिर्च से सबसे ज्यादा आय हुई थी। मसाला बोर्ड ने कहा कि इस साल 1,81,500 टन मिर्च का निर्यात हुआ, जिससे 1,614.17 करोड़ रुपये की आमदनी हुई। वहीं, पिछले साल मिर्च का निर्यात 1,74,798 टन रहा था, जिसकी कीमत 1,408.68 करोड़ रुपये थी।

भारतीय कृषि बीमा की वर्तमान स्थिति

विनोद कुमार वर्मा, डॉ प्रदीप कुमार , डॉ गजानन्द जाटए डॉ. धर्मपाल सिंह

1. विनोद कुमार वर्मा, शोध छात्र, विद्यावाचस्पति, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, श्री क.न. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर (राज)

2. डॉ. प्रदीप कुमार, सहायक आचार्य, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, श्री क.न. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर (राज.)

3. डॉ. गजानन्द जाट, सहायक आचार्य, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

4. डॉ. धर्मपाल सिंह सहायक आचार्य, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

भारत में कृषि मानसून एक जुआ है। स्वतंत्र भारत में कृषि विकास एवं अनुसंधान की लम्बी यात्रा के बाद भी आज अनाज (गेंहूँ 10.5:, चावल 44:, ज्वार 91:, बाजरा 91.1: तथा मक्का 79. 9:) उत्पादन का 47.7 प्रतिशत, तिलहन 72 प्रतिशत, कपास 63. 9 प्रतिशत तथा दालों के 85 प्रतिशत कृषि क्षेत्र का पूर्णतः वर्षा पर निर्भर रहता है। इस तथ्य की पुष्टि करता है। भारी वर्षा, बाढ़, सूखा, ओलावृष्टि, चक्रवात, भूकम्प, कीट एवं बीमारियों के आक्रमण जैसी प्राकृतिक आपदाएं कोढ़ में खाज जैसी की स्थिति पैदा करती है। जलवायु अस्थिरता, तापमान में वृद्वि, अनिश्चित मानसून तथा ग्लोबल गांव की बाजार नियंन्त्रित स्थितियों एवं परिस्थितियों ने खेती एवं पशुधन विकास को कहीं अधिक जोखिम पूर्ण एवं हानि के प्रति संवेदनशील बना दिया है। यही कारण है कि देश के 12.73 करोड़ काश्तकारों, जिनमें लगभग 82 प्रतिशत लघु एवं सीमान्त किसान है तथा 10.68 करोड़ कृषि श्रमिकों के साथ साथ 48.5 करोड़ पशुसंपदा के ऊपर हमेशा संकटों के बादल छाए रहते है। इसी के चलते कृषि बीमा की अवधारणा अस्तित्व में आई। वस्तुतः कृषि बीमा (फसल, पशुपालन, बागवानी इत्यादि कृषि उत्पादन जोखिमों से किसानों को हुए नुकसान को, समान जोखिम के विरूद्व अन्य छोटे छोटे योगदान कर्त्ता किसानों से प्रीमियम के रूप में एकत्रित संचित निधि से हल्का अथवा कम किया जाता है। परन्तु, कृषि बीमा अवधारणा के व्यापक एंव दूरगामी उदेश्यों में प्राकृतिक आपदाओं से जनित फसल एवं पशुधन हानि के जोखिमों से किसानों को सुरक्षित करना, आर्थिक स्थिति में स्थायित्व तथा आय में निरंतरता बनाए रखना शामिल है जिससे किसान नवीन कृषि प्रोद्योगिकी में अधिक लागत लगाने का जोखिम उठाने में समर्थ हो सकें। बैंकों की ऋृण वसूली जोखिम को कम किया जा सके। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं किसानों को महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका को स्वीकारते हुए स्वतंत्र भारत की नीति समय समय पर इस दिशा में कदम उठाते रहे है। इसके बावजूद 21 वीं सदी मे भी कृषि एवं किसान संकट में है। जबकि कृषि विशेषज्ञों एवं अर्थशास्त्रियों का मानना है कि कृषि एवं ग्रामीण विकास की योजनाएं बहुत सोच विचार के बाद सही ढ़ंग से बनाई गई है। विशेषज्ञ मानते है कि योनजाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अधिक संसाधन नहीं है, तो इतने अपर्याप्त भी नही रहे है। प्रश्न उठता है तो फिर कमी कहाँ रही है। इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर ढूढने के लिए भारत में कृषि बीमा की प्रगति एंव उसके परिणामों पर एक नजर डालना अनिवार्य हो जाता है।

भारत में कृषि बीमा की प्रगति

प्रयोगों के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए सर्व प्रथम वर्ष 1972–73 में साधारण बीमा निगम ने व्यक्तिगत निवेदन/दृष्टिकोण के आधार पर कपास की एच–4 प्रजाति के लिए फसल के बीमा हेतु प्रायोगिक योजना शुरू की। बाद में इसे अन्य फसलों पर लागू किया गया। वर्ष 1978–79 तक यह योजना लागू रही। इस योजना का लाभ मात्र 3110 किसानों तक ही सीमित रहा। बाद में प्रो.वी. एम. दांडेकर की सिफारिशों के आधार पर वर्ष 1979 में भारतीय साधारण बीमा निगम द्वारा राज्यों की सहायता से प्रायोगिक फसल बीमा योजना क्षेत्रीय दृष्टिकोण के आधार पर 13 राज्यों में लागू की, जिसमें शत प्रतिशत ऋण की सीमा को कवर किया गया। वर्ष 1984–85 तक इस योजना से 6.27 लाख किसानों की फसल का बीमा किया गया। व्यावहारिकता के अभाव में यह योजना भी सफल नहीं हो पाई। इस अवधि को भारतीय कृषि बीमा के इतिहास में प्रथम चरण के रूप में परिभाषित किया जाता है।

किसानों की खेती में अन्तर्निहित जोखिमों एवं चुनौतियों तथा पिछले अनुभवो के आधार पर दूसरे चरण में अप्रेल 01, 1985 से भारत सरकार ने संशोधित व्यापक फसल बीमा योजना राज्यों की स्वैच्छिक सक्रिय सहभागिता के आधार पर शुरू करने का फैसला किया। जिसमे 15 राज्य तथा 2 संघशासित क्षेत्र शामिल हुए। इस योजना में बीमांकित राशि की मात्रा बैंकों से प्राप्त ऋण के बराबर निर्धारित की गई। जिसे बाद में 150 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया। खरीफ 1999 तक इस योजना का घोषित लाभ देश के 7.63 करोड़ किसानों ने उठाया, जिन्हें क्षतिपूर्ति दावे के रूप में 2303.45 करोड़ रूपये का भुगतान किया गया जिसका दावा अनुपात 1:5.71 था। इस योजना का चिंताजनक पक्ष यह रहा कि दावा भुगतान एवं बीमाकित किसानों की संख्या में राज्यों की समान हिस्सेदारी नहीं रही। दावों के भुगतान का 85 प्रतिशत हिस्सा देश के चार राज्यों, गुजरात 47 प्रतिशत, आन्ध्र प्रदेश 21 प्रतिशत, महाराष्ट्र 9 प्रतिशत तथा 8 प्रतिशत ओडीशा के किसानों को दिया गया। सबसे अधिक कपास एवं मूंगफली उत्पादक किसानों ने ही इस योजना में रूचि दिखाई। शेष फसलों का बीमा सिर्फ प्रतीकात्मक रूप में ही रहा। नीतिगत, प्रशासनिक एवं व्यावहारिक अदूरदर्शिता के चलते योजना किसानों के मध्य व्यापक लोकप्रियता हासिल नहीं कर पाई और अधिकांश किसान योजना का लाभ उठाने से वंचित रह गये। योजना के क्रियान्वयन के स्तर पर सामने आई व्यावहारिक कठिनाईयों, किसानों की आय में निरंतर गिरावट, उत्पादन एवं उत्पादकता में आई स्थिरता तथा देश के विभिन्न हिस्सों से किसानों की आत्महत्याओं की दर्दनाक खबरों ने नीति निर्माताओं को फसल बीमा योजनाओं को नए पूर्नविचार करने पर मजबूर कर दिया। अतः वर्ष 1999–2000 के रबी मौसम से भारतीय साधारण बीमा के समन्वय से राष्ट्र कृषि बीमा योजना प्रारम्भ की गई, जिसमें सभी खाद्य फसलों, तिलहन, बागवानी फसलों को शामिल किया गया। इस योजना के अर्न्तगत गन्ना, प्याज, आलू, हल्दी, मिर्च, तिलहन, जूट, धनिया, जीरा, लहसुन इत्यादि को रखा गया। इसी समय आधुनिक बीज उद्योग को बढ़ावा देने, बीज उत्पादकों की आय में स्थायित्व तथा वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के उदेश्य से प्रायोगिक बीज फसल बीमा योजना भी शुरू की गई। दुर्भाग्यवश पूर्व की तरह ये तीसरे चरण की योजनाएं भी लक्ष्य भेदने मे असफल रही।

आखिर भारतीय साधारण बीमा निगम (35:), नाबार्ड (30:), नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि., न्यु इण्डिया इंश्योरेंस कं लि., ओरियन्टल बीमा कं. लि., एवं यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि. प्रत्येक ने 8.75 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ मिलकर 1500 करोड़ रूपये को अधिकृत शेयर पूंजी तथा 200 करोड़ रूपये की चुकता शेयर पूंजी से एग्रीकल्चरल इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इण्डिया लि. नाम की बीमा संस्था को दिसम्बर 20, 2002 में निगमित कराया, जिसने अप्रेल 01, 2003 से भारतीय साधारण बीमा निगम से राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना के क्रियान्वयन का कार्य अपने हाथ में ले लिया था। आज कृषि बीमा कम्पनी ऑफ इण्डिया लि. कृषि में जोखिमो से सुरक्षा के निमित्त तमाम कृषि बीमा उत्पाद किसानों के मध्य ला रही है जिसमें मौसम आधारित फसल बीमा योजना, वर्षा, सूखा सुरक्षा कवच, कृषि आय योजनाएं शामिल है। इसके बाद भी कृषि एवं किसानों की स्थिति खराब होती जा रही है। विश्व में सबसे अधिक किसानों को बीमा उपलब्ध कराने वाली भारत की कृषि बीमा कं लि. ने अभी तक पशुधन बीमा योजना को अपने हाथ में नहीं लिया है। खेती एवं पशुपालन का चोली दामन का साथ है। जिसे अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक ही उदेश्य के लिए विभिन्न अभिकरणों की परस्पर व्याप्ति जहां किसानों को भ्रमित कर रही है वही इसके क्रियान्वयन एवं समन्वयन में व्यावहारिक कठिनाईयों किसानों को इसे अपनाने से रोक रही है। वर्ष 2013 के दौरान 24115442 किसानो और 56907029 है. भूमि को आच्छादित कर ए.आई.सी. विश्व की सबसे बडी फसल बीमा कम्पनी बन गई है। इस वर्ष तक 5ण्40 करोङ किसानों को लाभ प्रदान किया गया।

वर्ष 2012–13 तक कंपनी के पास मात्र 209 कर्मचारी व अधिकारी है। जिनके हाथ मे देश के 12.73 करोड़ कृषि जोतों की सुरक्षा एवं सहायता का जिम्मा है। स्थापना के 6 वर्ष बाद भी कंपनी के पास विषय विशेषज्ञों एवं कॉडर आधारित स्टाफ एवं प्रबंधन तंत्र का ग्राम स्तर से लेकर जिला व राज्य स्तर तक अभाव कृषि बीमा योजनाओं को अपना रहे है। इसमें कर्ज न लेने वाले स्वैच्छिक किसानों की संख्या नाम मात्र ही है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि अभी तक सभी कृषि बीमा योजनाएं न केवल किसानो का विश्वास जीतने में असफल रही है बल्कि राज्यों में कृषि बीमा का लाभ उठाने में असमानता आज भी बनी हुई है। रबी मौसम 2012–2013 में महाराष्ट्र 17.58:, उडीसा 4.96:, आन्ध्र प्रदेश 12.62: तथा मध्य प्रदेश 8.92: कृषि बीमा का लाभ उठाने में अग्रणी राज्य रहें है।

समस्या की पृष्ठभूमि

भारतीय किसानों की असली समस्या उनके उत्पाद के लाभकारी मूल्य की है। राष्ट्रीय किसान आयोग की अंतिम रिपोर्ट के एक अध्ययन के अनुसार भारत के प्रमुख बारह धान उत्पादक राज्यों में से सिर्फ चार राज्यों मे ही धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य उत्पादन लागत से अधिक था। शेष आठ राज्यों मे धान की उत्पादन लागत न्यूनतम समर्थन मूल्य से अधिक थी गेंहूँ की खेती किसानो के लिए घाटे का सौदा थी। जहां तक दुग्ध उत्पादन व्यवसाय का प्रश्न है, तो सच यह है कि भारत में दूध की कीमत इण्डिया के किसी ब्रांडधारी पानी की कीमत से कही कम है। प्रश्न उठना स्वभाविक है कि आखिर किसान को घाटे का बीमा कराने से लाभ क्या है। बीमा तो संभावित क्षति से सुरक्षा हेतु कराया जाता है। भारतीय किसान तो घाटे का बीमा कराने के लिए पहले से ही अभिशप्त है। इस स्थिति में कृषि बीमा का लाभ किसानों को मिलना केसे सुनिश्चित माना जा सकता है आपदा की स्थिति में ऋण धारक किसान को क्षति पूर्ति के रूप में प्राप्त राशि उसके ऋण खाते मे चली जाती है। फिर बीमा की दावा राशि से किसान द्वारा लिए ऋण पूर्ति असंभव है। भारत के 48.6 प्रतिशत कृषि परिवार आज भी ऋणग्रस्तता में फंसे हुए है जबकि सीमान्त किसानों के 61 प्रतिशत परिवारो पर ऋणग्रस्तता का भार है।

यह विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि उपयुक्त आंकडों में ऑफ मौसम की समाप्ति के बाद (दिसम्बर से मार्च) जिसे गांवो मे अन्न संकट अवधि के रूप में जाना जाता है। वस्तु के रूप में उधार लिए गए खाद्यान्न जो तीन महीने बाद लगभग सवा गुना करके चुकाना पड़ता है शामिल नही है। इस तरह गरीबी की गलत अवधारणा तथा निम्न स्थिर कृषि उत्पादन व उत्पादकता की स्थिति में कोई भी आधुनिक कृषि तकनीक एवं कृषि बीमा योजना किसानों के लिए स्वंय अपना अर्थ खो देती है। वास्तविक अर्थो में बीमा फसल का नही ऋण वसूली का होता है इसलिए बीमा प्रीमियम को ऋण लागत के रूप में परिभाषित करना उचित होगा जो फसल के उत्पादन लागत का हिस्सा है, जिसे कृषि लागत एवं मूल्य आयोग फसलों का न्यून्तम समर्थन मूल्य निर्धारित करते समय शामिल नहीं करता है। दरअसल बीमा की अवधारण विकसित देशों से आयातित है, जहाँ हर स्तर पर बीमा के द्वारा आर्थिक जोखिमों से वित्तीय सुरक्षा एवं सहायता प्रदान की जाती है जहां लोग आय का नहीं विलासिता का बीमा कराते है जहां आय समस्या नहीं है। भारत के संबंध मे स्थिति एक दम उलटी है। यहां बीमा फसल का नहीं गरीबी एवं घाटे का किया जाता है। जैसा कि राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्ययन से स्पष्ट है। इस स्थिति में बीमाकित तथा बीमा कंपनी दोनों ही घाटे में रहती है। यही कारण है कि अभी तक कोई भी निजी बीमा कंपनी कृषि बीमा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से उतरने को तैयार नहीं है। कृषि तथा कृषि के अर्थशास्त्र का कड़वा सच यह है जिसकी व्यवहारिकता को कृषि बीमा तथा इससे संबंधित नीतियों को बनाते समय अक्सर नजर अंदाज कर दिया जाता है जबकि इस सच्चाई को केन्द्र मे रखकर कृषि एवं ग्रामीण विकास की नीतियां तथा कृषि बीमा की योजनाएं नहीं बनाई जाती है। तब तक किसानों को इसका वास्तविक लाभ नहीं मिलेगा।

व्यावहारिक चुनौतियां एवं समाधान

फसल नष्ट होने की स्थिति में क्षतिपूर्ति का निर्धारण पहले से तैयार फार्मूले के अनुसार किया जाता है। क्षतिपूर्ति का आकलन तभी संभव होता है जब कम पंचायत स्तर पर फसल में नुकसान हुआ हो। व्यक्तिगत चार–छः किसानों को फसल नष्ट होने की स्थिति में नहीं। जबकि बीमा प्रीमियम किसान व्यक्तिगतरूप से भरता है। ऐसे में फसल को कैसे बीमित माना जा सकता है इस तरह क्षतिपूर्ति का यह फार्मूला ही गलत एवं अव्यावहारिक है। फसल उत्पादन में बुवाई से लेकर अंतिम उत्पाद के बाजार में पहुंचने तथा मूल्य हाथ में आने तक हर स्तर पर भारी जोखिम शामिल होता है जबकि कंपनियां सिर्फ प्राकृतिक आपदाओं के विरूद्व सीमित अवधि के लिए बीमा प्रदान करती है। बाजार जनित एवं कटाई के बाद उत्पन्न जोखिम शामिल नही होते है। आज भी बीमा कंपनी द्वारा फसल के लिए उनके द्वारा निर्धारित वित्तीय मान के बराबर ही अधिसूचित फसल के लिए बीमा कवर प्रदान किया जाता है। यदि किसान इससे अधिक का बीमा कराना चाहता है, तो उसे बढ़ी हुई प्रीमियम दरे देनी होती है।

कृषि बीमा कं. लि. का गठन हुए दस वर्ष बीत चुके हैं। फिर भी कृषि जोखिम से सुरक्षा के निमित्त उसके पास कृषि बीमा उत्पादों के निर्माण, क्रियान्वन, निगरानी, मूल्यांकन एवं शोध हेतु कृषि विशेषज्ञों, मानव संसाधन का नितान्त अभाव है बीमा उत्पादों के त्वरित एवं प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कंपनी में हर स्तर पर कैंडर आधारित विषय विशेषज्ञों की नियुक्ति अनिवार्य है। आर्थिक हालातों एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मदेनजर इनकी सेवा शर्तो में अनिवार्य रूप से गांवों में रहने, क्षैत्रीय विकास, कृषि उत्पादन, उत्पादकता, पशुधन विकास, गरीबो के लिए रोजगार सृजन इत्यादि की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी अनिवार्य रूप से शामिल की जानी चाहिए। ये गांवो में ग्रामीणों के मध्य आसानी से एक मित्र दार्शनिक, दिशा निर्देशक तथा कृषि विशेषज्ञ की भूमिका प्रभावी ढ़ंग से निभाते हुए किसानों को छोटी बडी समस्याओं को सुलझाने में भी मददगार साबित होंगे। इससे किसानों के अन्दर कृषि बीमा योजना के प्रति न केवल विश्वास पैदा होगा बल्कि इसे अपनाने की दिशा में आगे आएगें। एक तरफ बीमा उत्पाद को व्यक्तिगत स्तर पर लागू करना संभव होगा, तो दूसरी तरफ फसल ऋण के सही व पूरे उपयोग की संभवनाएं बढेगी जिसका सीधा प्रभाव फसल उत्पादकता एवं उत्पादन पर पडेगा। यह तभी संभव होगा जब बीमा उत्पाद की सफलता असफलता, कार्यकुशलता, लाभप्रदता एवं योजना के अन्तिम परिणामों की निष्पादकता की संपूर्ण जिम्मेदारी एवं जवाबदेही इस कैडर आधारित स्टाफ की निर्धारित की जाएगी। ऐसा करना वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों, बैंकिग तथा बीमा क्षेत्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धा की भावना के अनुरूप होगा। इसके लिए देश में पर्याप्त संख्या मे कृषि स्नातक तथा स्नातकोत्तर मौजूद है, जिन्हें गांवो में रहने में कोई परहेज नहीं होगा।

अतः जरूरी है कि भारतीय कृषि बीमा कं.लि. का स्वरूप बहुआयामी एवं संयुक्त उत्पादोन्मुख कृषि एवं ग्रामीण बीमा प्रणाली का हो। यह साधारण बीमा निगम की मनी बैंक पॉलिसी जैसे सयुक्त कृषि बीमा उत्पाद के विकास की आवयकता है, जो कृषि एवं पशुपालन दोनो को अपने दायरे में ले सके, जिसकी परिपक्वता अवधि के बाद जोखिम कवर करने के साथ साथ पैसा मिलने की संभावना बनी रहे। जितनी जल्दी हो कृषि बीमा कंपनी गांव पंचायत ब्लाक तहसील जिला मंडल राज्य स्तर पर अर्ध संरचानात्मक ढ़ाचा विकसित करने की दिशा मे तुरंत कदम उठाए। वर्तमान मे कृषि बीमा व्यवस्था में स्थानीय राजस्व विभाग, कृषि विभाग, मौसम विभाग, सांख्यिकी विभाग, बैंक, राज्य व केन्द्र सरकार तथा बीमा कंपनी इत्यादि शामिल है। इस स्थिति में किसानो को कृषि बीमा कहां से करायें तथा भुगतानो के दावे हेतु किसके पास जाएं। संस्थाओ की बहुलता प्रक्रिया के कारण इनमें समन्वय, जिम्मेदारी, जवाबदेही एवं प्रतिबद्वता का नितान्त अभाव है। अतः सबसे महत्वपूर्ण बीमा व्यवस्था मे शामिल विभिन्न एजेंसियों को कम करके मात्र एक या दो संस्थाएं इस काम को पूरी तरह से अपने हाथ मे ले। कृषि बीमा शिक्षा के प्रचार प्रसार का सघन अभियान शुरू करें। क्षतिपूर्ति आकलन के फार्मूलें को संशोधित कर व्यावहारिक बनाने की दिशा में कोई ठोस व निर्णायक कदम उठाये। जिसमें किसान बीमा उत्पादों को स्वीकार कर सके, क्षति होने की स्थिति मे उन्हे उसका लाभ मिल सके।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की भूमिका

95 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की 10,563 शाखाएं भारत के गांव गांव मे फैली हुई है। अतः ग्रामीण कृषि बीमा मॉडल के आधार पर कैडर आधारित स्टाफ के साथ कृषि एवं ग्रामीण बीमा की जिम्मेदारी कुछ सुधारो एवं संशोधित सेवा शर्तो के साथ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सौपी जा सकती है क्योकि ये बैंक पहले से ही कृषि बीमा प्रक्रिया मे निर्णायक भूमिका निभा रहे है

कृषि बीमा उत्पादों की परस्पर व्याप्ति

सबसे महत्वपूर्ण कृषि बीमा उत्पादों की बहुलता एवं परस्पर व्याप्ति ने किसानों एवं मजदूरो के बीच भ्रम की स्थिति पैदा कर दी है। उत्पादों की बहुलता ने योजना के अन्तिम परिणामों को न केवल प्रभावित किया है बल्कि इसे एकदम अव्यावहारिक बना दिया है जहां दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल हो गया, वहाँ गरीब, सीमान्त व लघु किसान कितने बीमा कराएगा। आय का, फसल का, पशु का, वर्षा का या फिर अपनी जिंदगी का। निरक्षर एवं व्यस्त किसानो के लिए इतने बीमा उत्पादों की प्रक्रियागत जटिलता प्रीमियम भुगतान रख रखाव तथा भागदौड का विचार ही बीमा की ओर देखने से रोक देता है। अतः किसानो को एक ऐसी व्यापक, सरल व समन्वित कृषि बीमा उत्पाद की जरूरत है जिसमे उपयुक्त सभी जोखिम शामिल हो। इसके लिए पैकेज बीमा की दिशा में आगे बढ़ना होगा जिससे योजनाओं के दोहराव से बचा जा सके और किसान आसानी से इन्हे स्वीकार कर सके।

भारतीय रिजर्व बैंक एवं कृषि बैकिग महाविद्यालय की निर्णायक भूमिका

कृषि एवं ग्रामीण विकास से संबंधित शोध, योजना एवं नीतियो का गहराई से अध्ययन करने हेतु रिजर्व बैंक के पास पर्याप्त व उत्कृष्ट अर्ध संरचना है। कृषि बैंकिग महाविद्यालय तथा अन्य संस्थाए इस दिशा मे सफलता पूर्वक कार्य कर रही है। इसे और कृषि उन्मुख एवं विशिष्ट बनाने के लिए रिजर्व बैंक अपने वर्तमान स्टाफ मे से कृषि क्षेत्र के स्नातकों, स्नातकोतर तथा डॉक्टरों कर्मचारियो को मिला कर प्राथमिक डाटा पर आवश्यकता आधारित शोध तथा अन्य कृषि नीतियों के निर्माण एवं मूल्यांकन हेतु कृषि बैकिग महाविद्यालय मे एक नए विभाग को स्थापना कर सकता है, इसे रिजर्व बैंक के उपर कोई अतिरिक्त भार नही पडेगा । मात्र एक परिपत्र से एक कॉडर आधारित मानव संसाधन के साथ एक नये विभाग का गठन करके कृषि क्षेत्र मे जमीनी स्तर पर और गुणवत्तापूर्ण एवं यथार्थ पूरक अध्ययन के द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका को सुदृढ किया जा सकता है। अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि भारतीय किसानो को ऐसी एक सरल, योजना की जरूरत है जो आसानी से उनके दरवाजे पर उपलब्ध व्यापक राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बीमा पैकेज दे सके। जो न केवल प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति मे उसे वित्तीय सुरक्षा एवं सहायता प्रदान करे बल्कि कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता के साथ टिकाऊ कृषि आय का आधार बन सके। क्षतिपूर्ति दावो के भुगतान तुरन्त व समय पर प्रदान करने के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों मे साधारण बीमा का भी कार्य अपने हाथ में ले सके। यह तभी सभव है जब कृषि बीमा नीतियो के क्रियान्वयन एवं उनके अन्तिम परिणामों को निष्पादन हेतु शामिल कर्मचारियों एवं संस्थाओं को जिम्मेदारी एवं जवाबदेही क्रियान्वयन के हर स्तर दृढता पूर्वक किया जाए।

सदर्भ स्रोतः–

1. आर्थिक समीक्षा 2012–13 वित्त मंत्रालय भारत सरकार
2. कृषि बीमा कम्पनी की वार्षिक रिपोर्ट 2012–13
3. कृषि बीमा कम्पनी ली. राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना व्यवसाय सांख्यकी 2012–13
4. भारत मे फसल बीमा का इतिहास, एग्रीकल्चर इश्योरेन्स कम्पनी ऑफ इण्डिया ली. आर्थिक समीक्षा वर्ष 2001 से 2012. 13 वित्त मंत्रालय भारत सरकार

तीन दिन तक ड्रेनेज चेंबर में फंसी

पुणे। शहर में बने एक ब्रिटिशकालीन 20 फीट गहरे ड्रेनेज चेंबर में एक गाय तीन दिन तक फंसी रही। गाय ने उसमें फंसे रहने के दौरान एक बछड़े को भी जन्म दिया। एक कड़े रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद गाय को उसके बछड़े के साथ निकाला गया। ड्रेनेज चेंबर से निकले गाय और बछड़े का इलाज शहर के पशुचिकित्सालय में जारी है। अब स्थानीय लोगों की शिकायत के बाद पुलिस गाय के मालिक की तलाश कर रही है।

पिंपरी स्थित मिलिट्री डेरी फार्म के खेत में ब्रिटिशकालीन 20 फीट गहरे ड्रेनेज चेंबर हैं। उस पर ढक्कन या सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं है। तीन दिन पहले एक गर्भवती गाय इसमें जा गिरी। मिलिट्री के क्षेत्र और बस्ती से दूर रहने के कारण ड्रेनेज में गाय फंसी रहने का अंदाज ही किसी को नहीं आया। लेकिन स्थानीय नागरिकों ने तीन दिन पहले यहां गाय के रंभाने की आवाज सुनी है। लेकिन कहीं दिखाई नहीं देने से उसे नज़रअंदाज़ किया जाता रहा। इन्हीं हालातों में गाय ने कल एक बछड़े को जन्म दिया।

ऊंटनी का दूध रखे तेज दिमाग और फिट शरीर

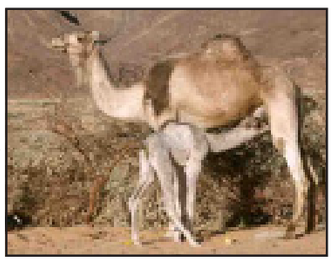

ऊंटनी का दूध काफी हद तक मां के दूध की तरह गुणकारी होता है। इसमें वो सभी पोषक तत्व होते हैं जो कि एक बच्चे के सुंदर, सुडौल और सुविकसित शरीर के लिए अत्यंत जरूरी हैं। इसके इस्तेमाल से उन सारे विटामिन्स और मिनरल्स की पूर्ति हो जाती है जो भोजन और फलों से नहीं हो पाती।

इसका नियमित इस्तेमाल करने वाले बच्चों का मस्तिष्क सामान्य बच्चों की तुलना में तेजी से विकसित होता है। इतना ही नहीं उसकी सोचने-समझने की झमता में भी सामान्य लोग बहुत पीछे होते हैं। कुल मिलाकर यह बच्चों को एक ओर कुपोषण से बचाता है तो दूसरी ओर उसमें बौद्धिक क्षमता के विकास में भी सहायक है।

अरसे बाद फतहसागर में दिखे हवासील

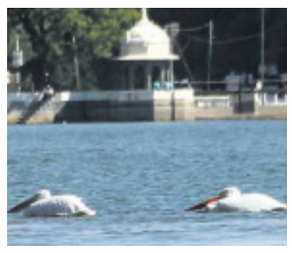

उदयपुर. शहर का हार्ट ऑफ लेक फतहसागर में संडे को ट्रांस हिमालय से आए माइग्रेटरी बर्ड रोजी पेलीकन (हवासील) को लंबे समय बाद देखा तो पक्षीविदों के मुंह से निकल पड़ा देखो रोजी पेलीकन। मछली खाने के शौकीन हवासील की झील में मौजूदगी ने जहां फतहसागर आने वालों के चेहरों पर भी खुशी ला दी वही पक्षीविदों ने कहा कि माइग्रेटरी बर्ड का यहां दिखाई देना अच्छा संकेत है। रोजी पेलीकन लंबे समय बाद फतहसागर में देखे गए।

सड़क पर आ गया मगरमच्छ

उदयपुर. जुणदा गांव (कुंवारिया) के पास स्थित तालाब से मगरमच्छ सड़क किनारे आ गया। मगरमच्छ को देख लोगों में दहशत फैल गई। वन विभाग कर्मचारी और वाइल्ड एंड स्ट्रीट एनिमल रेस्क्यू सोसायटी की टीम ने मगरमच्छ को पकड़ा। सोसायटी के पद्म सिंह राठौड़ ने बताया कि जुणदा गांव में मगरमच्छ होने की सूचना मिलने पर वह टीम के साथ वहां पहुंचे। वहां वन विभाग के कर्मचारियों के निर्देशन में मगरमच्छ को पकड़ा।

कुक्कुट की नस्लें और उनकी उपलब्धता

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर द्वारा विकसित नस्लें घर के पिछवाड़े में पाले जाने वाली नस्लें

कारी निर्भीक (एसील क्रॉस)

-एसील का शाब्दिक अर्थ वास्तविक या विशुद्ध है। एसील को अपनी तीक्ष्णता, शक्ति, मैजेस्टिक गेट या कुत्ते से लड़ने की गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। इस देसी नस्ल को एसील नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसमें लड़ाई की पैतृक गुणवत्ता होती है।

-इस महत्वपूर्ण नस्ल का गृह आंध्र प्रदेश माना जाता है। यद्यपि, इस नस्ल के बेहतर नमूने बहुत मुश्किल से मिलते हैं। इन्हें शौकीन लोगों और पूरे देश में मुर्गे की लड़ाई-शो से जुड़े हुए लोगों द्वारा पाला जाता है।

-एसील अपने आप में विशाल शरीर और अच्छी बनावट तथा उत्कृष्ट शरीर रचना वाला होता है।

-इसका मानक वजन मुर्गों के मामले में 3 से 4 किलो ग्राम तथा मुर्गियों के मामले में 2 से 3 किलो ग्राम होता है।

-यौन परिपक्वता की आयु (दिन) 196 दिन है।

-वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 92

-40 सप्ताह में अंडों का वजन (ग्राम)- 50

कारी श्यामा (कडाकानाथ क्रॉस)

-इसे स्थानीय रूप से 'कालामासी' नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ काले मांस (फ्लैश) वाला मुर्गा है। मध्य प्रदेश के झाबुआ और धार जिले तथा राजस्थान और गुजरात के निकटवर्ती जिले जो लगभग 800 वर्ग मील में फैला हुआ है, इन क्षेत्रों को इस नस्ल का मूल गृह माना गया है।

-इनका पालन ज्यादातर जनजातीय, आदिवासी तथा ग्रामीण निर्धनों द्वारा किया जाता है। इसे पवित्र पक्षी के रूप में माना जाता है और दीवाली के बाद इसे देवी के लिए बलिदान देने वाला माना जाता है।

-पुराने मुर्गे का रंग नीले से काले के बीच होता है जिसमें पीठ पर गहरी धारियां होती हैं।

-इस नस्ल का मांस काला और देखने में विकर्षक (रीपल्सिव) होता है, इसे सिर्फ स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि औषधीय गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है।

कडाकनाथ के रक्त का उपयोग आदिवासियों द्वारा मानव के गंभीर रोगों के उपचार में कामोत्तेजक के रूप में इसके मांस का उपयोग किया जाता है।

-इसका मांस और अंडे प्रोटीन (मांस में 25-47 प्रतिशत) तथा लौह एक प्रचुर स्त्रोत माना जाता है।

-20 सप्ताह में शरीर वजन (ग्राम)- 920

-यौन परिपक्वता में आयु (दिन)- 180

-वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 105

-40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)- 49

-जनन क्षमता (प्रतिशत)- 55

-हैचेबिल्टी एफ ई एस (प्रतिशत)- 52

हितकारी (नैक्ड नैक क्रॉस)

-नैक्ड नैक परस्पर बड़े शरीर के साथ-साथ लम्बी गोलीय गर्दन वाला होता है। जैसे इसके नाम से पता लगता है कि पक्षी की गर्दन पूरी नंगी या गालथैली (क्रॉप) के ऊपर गर्दन के सामने पंखों के सिर्फ टफ दिखाई देते हैं।

-इसके फलस्वरूप इनकी नंगी चमड़ी लाल हो जाती है विशेषरूप से नर में यह उस समय होता है जब ये यौन परिपक्वतारूपी कामुकता में होते है।

-केरल का त्रिवेन्द्रम क्षेत्र नैक्ड नैक का मूल आवास माना जाता है।

-20 सप्ताह में शरीर का वजन (ग्राम)- 1005

-यौन परिपक्वता में आयु (दिन)- २०१

-वार्षिक अंडा उत्पादन (संख्या)- 99

-40 सप्ताह में अंडे का वजन (ग्राम)- 54

-जनन क्षमता (प्रतिशत)- 66

-हैचेबिल्टी एफ ई एम (प्रतिशत)- 71

उपकारी (फ्रिजल क्रॉस)

-यह विशिष्ट मुरदार-खोर (स्कैवइजिंग) प्रकार का पक्षी है जो अपने मूल नस्ल आधार में विकसित होता है। यह महत्वपूर्ण देसी मुर्गे की तरह लगता है जिसमें बेहतर उपोष्ण अनुकूलता तथा रोग प्रतिरोधिता, अपवर्जन वृद्धि तथा उत्पादन निष्पादन शामिल है।

-घर का पिछवाड़ा मुर्गी पालन के लिए उपयुक्त है।

-उपकारी पक्षियों की चार किस्में उपलब्ध हैं जो विभिन्न कृषि मौसम स्थितियों के लिए अनुकूल है।

काडाकनाथ X देहलम रैड

असील X देहलम रैड

नैक्ड नैक X देहलम रैड

फ्रिजल X देहलम रैड

निष्पादन रूपरेखा

-यौन परिपक्वता की आयु 170-180 दिन

-वार्षिक अंडा उत्पादन 165-180 अंडे

-अंडे का आकार 52-55 ग्राम

-अंडे का रंग भूरा होता है

-अंडे की गुणवत्ता, उत्कृष्ट आंतरिक गुणवत्ता

-95 प्रतिशत से ज्यादा सहनीय

-स्वभाविक प्रतिक्रिया तथा बेहतर चारा

लेयर्स

कारी प्रिया लेयर

-पहला अंडा 17 से 18 सप्ताह

-150 दिन में 50 प्रतिशत उत्पादन

-26 से 28 सप्ताह में व्यस्तम उत्पादन

-उत्पादन की सहनीयता (96 प्रतिशत) तथा लेयर (94 प्रतिशत)

-व्यस्तम अंडा उत्पादन 92 प्रतिशत

-270 अंडों से ज्यादा 72 सप्ताह तक हेन हाउस

-अंडे का औसत आकार

-अंडे का वजन 54 ग्राम

कारी सोनाली लेयर (गोल्डन- 92)

-18 से 19 सप्ताह में प्रथम अंडा

-155 दिन में 50 प्रतिशत उत्पादन

-व्यस्तम उत्पादन 27 से 29 सप्ताह

-उत्पादन (96 प्रतिशत) तथा लेयर (94 प्रतिशत) की सहनीयता

-व्यस्तम अंडा उत्पादन 90 प्रतिशत

-265 अंडों से ज्यादा 72 सप्ताह तक हैन-हाउस

-अंडे का औसत आकार

-अंडे का वजन 54 ग्राम

कारी देवेन्द्र

-एक मध्यम आकार का दोहरे प्रयोजन वाला पक्षी

-कुशल आहार रूपांतरण- आहार लागत से ज्यादा उच्च सकारात्मक आय

-अन्य स्टॉक की तुलना में उत्कृष्ट-निम्न लाइंग हाउस मृत्युदर

-8 सप्ताह में शरीर वजन- 1700-1800 ग्राम

-यौन परिपक्वता पर आयु- 155-160 दिन

-अंडे का वार्षिक उत्पादन- 190-200

ब्रायलर

कारीब्रो – विशाल(कारीब्रो-91)

-दिवस होने पर वजन – 43 ग्राम

-6 सप्ताह में वजन – 1650 से 1700 ग्राम

-7 सप्ताह में वजन – 100 से 2200 ग्राम

-ड्रैसिंग प्रतिशतः 75 प्रतिशत

-सहनीय प्रतिशत – 97-98 प्रतिशत

-6 सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपातः 1.94 से 2.20

कारी रेन्ब्रो (बी-77)

-दिवस होने पर वजन – 41 ग्राम

-6 सप्ताह में वजन – 1300 ग्राम

-7 सप्ताह में वजन – 160 ग्राम

-सहनीय प्रतिशत – 98-99 प्रतिशत

-ड्रैसिंग प्रतिशतः 73 प्रतिशत

-६ सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपातः 1.94 से 2.20

कारीब्रो-धनराजा (बहु-रंगीय)

-दिवस होने पर वजन – 46 ग्राम

-6 सप्ताह में वजन – 1600 से 1650 ग्राम

-7 सप्ताह में वजन – 2000 से 2150 ग्राम

-ड्रैसिंग प्रतिशतः 73 प्रतिशत

-सहनीय प्रतिशत – 97-98 प्रतिशत

-६ सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपातः 1.90 से 2.10

कारीब्रो- मृत्युंजय (कारी नैक्ड नैक)

-दिवस होने पर वजन– 42 ग्राम

-6 सप्ताह में वजन – 1650 से 1700 ग्राम

-7 सप्ताह में वजन – 200 से 2150 ग्राम

-ड्रैसिंग प्रतिशतः 77 प्रतिशत

-सहनीय प्रतिशत – 97-98 प्रतिशत

-6 सप्ताह में आहार रूपांतरण अनुपातः 1.9 से 2.0

कोयल

-हाल ही के वर्षों में जैपनीज कोयल ने अपना व्यापक प्रभाव दिखाया है और अंडे तथा मांस उत्पादन के लिए पूरे देश में अनेक कोयला-फार्म स्थापित किये गये है। यह उपभोक्ताओं की गुणवत्ता वाले मांस के प्रति बढ़ती हुई जागरुकता के कारण हुआ है।

-निम्नलिखित घटक कोयल पालन प्राणाली को किफायती और तकनीकी रुप से व्यवहारिक बनाते हैं।

1.लघु अवधि पीढ़ी अंतराल

2.कोयल रोग के प्रति काफी सशक्त होती

3.किसी तरह के टीकाकरण की जरूरत नहीं होती

4.कम जगह की जरूरत होती

5.रख-रखाव में आसानी होती

6.जल्दी परिपक्व होती

7.अंडे देने की उच्च तीव्रता – मादा 42 की आयु में अंडे देना आरंभ करती

कारी उत्तम

-कुल अंडे सैट पर हैचेबिल्टीः 60-76 प्रतिशत

-4 सप्ताह में वजनः 150 ग्राम

-५ सप्ताह में वजनः 170-190 ग्राम

-4 सप्ताह में आहार दक्षताः 2.51

-5 सप्ताह में आहार दक्षताः 2.80

-दैनिक आहार खपतः 25-28 ग्राम

कारी उज्जवल

-कुल अंडे सैट पर हैचेबिल्टीः 60-76 प्रतिशत

-4 सप्ताह में वजनः 140 ग्राम

-5 सप्ताह में वजनः 170-175 ग्राम

-5 सप्ताह में आहार दक्षताः 2.93

-दैनिक आहार खपतः २५-२८ ग्राम

कारी स्वेता

-कुल अंडे सैट पर हैचेबिल्टीः 50-60 प्रतिशत

-4 सप्ताह में वजनः 135 ग्राम

-5सप्ताह में वजनः 155-165 ग्राम

-4 सप्ताह में आहार दक्षताः 2.85

-५ सप्ताह में आहार दक्षताः 2.90

-दैनिक आहार खपतः 25 ग्राम

कारी पर्ल

-कुल अंडे सैट पर हैचेबिल्टीः 65-70 प्रतिशत

-4 सप्ताह में वजनः 120 ग्राम

-दैनिक आहार खपतः 25 ग्राम

-50 प्रतिशत अंडा उत्पादन की आयुः 8-10 सप्ताह

-टैन-डे उत्पादनः 285-295 अंडे

गिनी कुक्कुट / गिनी मुर्गा

-गिनी मुर्गा एक काफी स्वतंत्र घूमने वाला पक्षी है।

-यह सीमांत और छोटे किसानों के लिए काफी उपयुक्त है।

-उपलब्ध तीन किस्में हैं- कादम्बरी, चितम्बरी तथा श्वेताम्बरी

विशेष लक्षण

-स्वस्थ पक्षी

-किसी भी तरह के कृषि मौसम स्थिति के लिए अनुकूल

-मुर्गे के अनेक सामान्य रोगों की प्रतिरोधी क्षमता

-विशाल और महंगे घरों की जरुरत न होना

-उत्कृष्ट चारा अनुकूलता

-चिकन आहार में उपयोग न किये जाने वाले समस्त गैर पारंपरिक आहार की खपत

-माइकोटोक्सीन तथा एफ्लाटोक्सीन के प्रति अधिक वहनीयता

-अंडे का बाहर का छिलका सख्त होने की वजह से कम टूटता है और इसकी बेहतर गुणवत्ता बनी रहने की अवधि में वृद्धि होती है

-गिनी मुर्गे का मांस विटामिन से भरपूर होता है तथा इसमें कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम होती है।

उत्पादन लक्षण वर्गन

-8 सप्ताह में वजन 500-550 ग्राम

-12 सप्ताह में वजन 900-1000 ग्राम

-प्रथम अंडे जनन में आयु 230-250 दिन

-औसत अंडे का वजन 38-40 ग्राम

-अंडा उत्पादन (मार्च से सितम्बर तक एक अंडे जनन चक्र में) 100-120 अंडे

-जनन क्षमता 70-75 प्रतिशत

-जनन शक्ति वाले अंडे सैट पर हैचेबिल्टी 70-80 प्रतिशत

टर्की

कारी-विराट

-चौड़ी छाती वाली सफेद प्रकार की टर्की की बाजार में बिक्री लगभग 16 सप्ताह की आयु में ब्रायलर के रूप में उस समय होती है जब मुर्गियां सामान्यतः लगभग 8 eकिलो ग्राम के जीवित वजन में और टौम का वजन लगभग १२ किलो ग्राम होता है।

-स्थानीय बाजार की मांग के अनुसार कम आयु में पशुवध द्वारा छोटे, फ्रायर रोस्टरों में इसे तैयार किया जा सकता है।

-कुक्कुटपालन परियोजना निदेशालय, हैदराबाद द्वारा विकसित ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में पिछवाड़े में पालन के लिए उपयुक्त पक्षी

-यह एक बहुरंगी तथा दोहरे प्रयोजन वाला पक्षी होने के साथ आकर्षक पक्षति (पूमेज) वाला पक्षी है।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः..
संस्था का नामः..
पूरा पताः..
ग्राम :..................................तहसील :.............................
जिलाः..................................राज्यः.............................पिन कोड
दूरभाष कार्यः..................................निवासः......................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 तीन वर्ष :351 पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।
सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :....................................
बैंक का नामः.................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.........................दिनांकः.................
स्थानः.................................. प्रतिनिधि का नामः.........................हस्ताक्षर सदस्यः.................
दिनांकः........................

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

लोबिया की उन्नत खेती

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

लोबिया एक पोस्टिक सब्जी है यह प्रोटीन का सस्ता श्रोत है। इसके अतिरिक्त इसमे काल्सियम, लोह एवं विटामिन की अच्छी मात्र पाए जाती है। इसे गर्मी तथा वर्षा दोनों मौसमों में उगाया जाता है।

जलवायु: लोबिया की खेती के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु उपयुक्त है। तापमान 24-27 डिग्री सें.ग्रे. के बीच ठीक रहता है। अधिक ठंडे मौसम में पौधों की बढ़वार रूक जाती है।

भूमि: लगभग सभी प्रकार की भूमियों में इसकी खेती की जा सकती है। मिट्टी का पी.एच. मान 5.5 से 6.5 उचित है। भूमि में जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए तथा क्षारीय भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

किस्में: पूसा कोमल (बैक्टीरियल ब्लाईट प्रतिरोधी), पूसा सुकोमल (मोजैक वाइरस प्रतिरोधी), अर्का गरिमा, वी.आर.सी.पी.-१(काशी श्यामला), वी.आर.सी.पी.-२(काशी गौरी), वी.आर.सी.पी.-३(काशी उन्नति), वी.आर.सी.पी.-4(काशी कंचन), अर्का समृधि आदि।

बीज दर: साधारणतया 12-20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। बीज की मात्रा प्रजाति तथा मौसम पर निर्भर करती है। बेलदार प्रजाति के लिए बीज की कम मात्रा की आवष्यकता होती है।

बुवाई का समय: गर्मी के मौसम के लिए इसकी बुवाई फरवरी-मार्च में तथा वर्षा के मौसम में जून अंत से जुलाई माह में की जाती है।

बुवाई की दूरी: झाड़ीदार किस्मों के बीज की बुवाई के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45-60 सें.मी. तथा बीज से बीज की दूरी 10 सें.मी. रखी जाती

है तथा बेलदार किस्मों के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 80-90 सें.मी. रखते हैं। बुवाई से पहले बीज का राइजोबियम नामक जीवाणु से उपचार कर लेना चाहिए। बुवाई के समय भूमि में बीज के जमाव हेतु पर्याप्त नमी का होना बहुत आवश्यक है।

उर्वरक व खाद: गोबर या कम्पोस्ट की 20-25 टन मात्रा बुवाई से १ माह पहले खेत में डाल दें। लोबिया एक दलहनी फसल है, इसलिए नत्रजन की 20 कि.ग्रा, फास्फोरस 60 कि.ग्रा. तथा पोटाश50 किग्रा/हेक्टेयर खेत में अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला देना चाहिए तथा २० कि.ग्रा. नत्रजन की मात्रा फसल में फूल आने पर प्रयोग करें।

खरपतवार नियंत्रण: दो से तीन निराई व गुड़ाई खरपतवार नियंत्रण के लिए करनी चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए स्टाम्प 3 लीटर/हेक्टेयर की दर से बुवाई के बाद दो दिन के अन्दर प्रयोग करें।

तुड़ाई: लोबिया की नर्म व कच्ची फलियों की तुड़ाई नियमित रूप से 4-5 दिन के अंतराल में करें। झाड़ीदार प्रजातियों में ३-४ तुड़ाई तथा बेलदार प्रजातियों में 8-10 तुड़ाई की जा सकती है।

उपज: हरी फली की झाड़ीदार प्रजातियों में उपज 60-70 क्विंटल तथा बेलदार प्रजातियों में 80-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है।

बीजोत्पादन: लोबिया के बीज उत्पादन के लिए गर्मी का मौसम उचित है क्योंकि वर्षा के मौसम में वातावरण के अंदर आर्द्रता ज्यादा होने से फली के अंदर बीज का जमाव हो जाने से बीज खराब हो जाता है। बीज शुद्धता बनाए रखने के लिए प्रमाणित बीज की पृथक्करण दूरी 5 मी. व आधार बीज के लिए 10 मी. रखें। बीज फसल में दो बार अवांछित पौधों को निकाल दें। पहली बार फसल के फूल आने की अवस्था में तथा दूसरी बार फलियों में बीज से भरने की अवस्था पर पौधे तथा फलियों के गुणों के आधारपर अवांछित पौधों को निकाल दें। समय-समय पर पकी फलियों की तुड़ाई करके बीज अलग कर लेने के बाद उन्हें सुखाकर व बीमारी नाशक तथा कीटनाशी मिलाकर भंडारित करें।

बीज उपज:5-6 क्विंटल/हेक्टेयर।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

जीवाणुज अंगमारी (जैन्थोमोनास कैम्पेस्ट्रिस विग्नीकोला)

रोग संक्रमित बीजों से निकलने वाले पौधों के बीज पत्रों, एवं नई पत्तियों पर रोग के लक्षण सर्वप्रथम दिखाई पड़ते हैं। इस रोग के कारण बीज पत्र लाल रंग के होकर सिकुड़ जाते हैं। नई पत्तियों पर सूखे धब्बे बनते हैं। पौधों की कलिकाएं नष्ट हो जाती हैं और बढ़वार रूक जाती है। अन्त में पूरा पौधा सूख जाता है।

नियंत्रणः रोगी पौधों के अवषेषों को नष्ट कर देना चाहिए। जल निकास का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। दो वर्षों का फसल चक्र अपनाना चाहिए। उपचारित बीज का प्रयोग करना चाहिए तथा उन्नत कृषि विधियां अपनानी चाहिए। खड़ी फसलों में कॉपर फफुन्दनाशक(ण्दज्जे ध्ंम्त्दग्) दंग्म्प्त्दग्३ कि.ग्रा. एक हजार लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

लोबिया मोजैक (मोजैक विषाणु)

लक्षण: रोगी पत्तियां हल्की पीली हो जाती हैं। इस रोग में हल्के पीले तथा हरे रंग के दाग भी बनते हैं। रोग की उग्र अवस्था में पत्तियों का आकार छोटा हो जाता है और उन पर फफोले सदृष उभार आ जाते हैं। रोगी फलियों के दाने सिकुड़े हुए होते हैं तथा कम बनते हैं।

नियंत्रण: रोगी पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।स्वस्थ तथा अच्छे पौधों से प्राप्त बीज को ही बीज उत्पादन के काम में लाना चाहिए। कीटनाषी जैसे मेटासिस्टाक्स (आक्सी मिथाइल डेमेटान) या रोगार (डाइमेथोएट एक मि.ली. या डायमेक्रान (फास्फेमिडान) का आधा मि.ली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर 15-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

चूर्णिल आसिता (एरीसाइफी पोलीगोनी) पत्तियों, फलियों तथा पौधे के अन्य भागों पर सफेद चूर्ण से दाग उत्पन्न होते हैं। धीरे-धीरे संपूर्णपत्ती सफेद चूर्ण से ढ़क जाती है। रोग की उग्रता में पत्तियां पीली होकर नीचे गिर जाती हैं।

नियंत्रण

1. रोगी पौधों के अवशेषों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।
2. खड़ी फसल पर गंधक के चूर्ण का 25-30 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। सल्फैक्स 2 कि.ग्रा., कैलिक्सीन 500 मि.ली. या कैराथेन 600 मि.ली. का 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर, प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव हर 12-15 दिन के अन्दर दोहराना चाहिए।

कीट प्रकोप एवं प्रबंधन

फली छेदकः इस बग के षिषु व वयस्क दोनों ही लोबिया व सेम की फसल की फलियों व कोमल प्ररोहों से रस चूसते हैं। इसके नियंत्रण के लिए डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.ली. /4 लीटर या इन्डोसल्फान ३५ ई.सी. 2 मि.ली./ली. का छिड़काव करें।

चेंपा (एफिड)-काले रंग के चेपा के षिषु व व्यस्क लोबिया, सेम, मटर व फ्रेंचबीन की पत्तियों व अन्य कोमल भागों से रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं।

प्रबंधन

नीम बीज अर्क (5 प्रतिशत) या क्विनलफोस 25 ई.सी. 2 मि.लि/लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. 1 मि.ली./4 लीटर का छिड़काव करें।

सागवान की वैज्ञानिक खेती

प्रकाश महला, गंगाराम एवं हरफूल सिंह
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर

सागवान उष्ण कटीबंधीय जलवायु का वृक्ष है। इसे इमारती लकड़ियों का राजा कहा जाता है। सागवान को मूल्यवान वृक्ष के रूप मे उन सभी स्थानों पर लगाकर लाभ कमाया जा सकता है जहां पर, इमली, नीम, आम, महुआ, जामुन तथा अमरूद आसानी से पैदा होते है। व्यापक रूप से यह पौधा भारत, बर्मा, बांग्लादेश, चीन तथा श्रीलंका आदि देशों में पाया जाता है। इसकी लकड़ी का फर्नीचर्स के अलावा मजबूती तथा भारवाहन वाले स्थानों पर अत्यधिक प्रयोग होता है। क्योंकि इसकी लकड़ी मजबूत, टिकाऊ, चिकनी तथा संघनित लिग्निन रेशों के कारण जल्दी से सड़ती नहीं है और दीमक का असर भी कम ही होता है। यह पौधा भारत में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा असम में बहुतयात से पाया जाता है। इस पौधे में अन्य पौधों की तुलना में रोग सहन करने की शक्ति भी अधिक होती है। आज बाजार में इसकी लकड़ी की कीमत 1200 रू. से 1800 रू. प्रति घनफुट है।

इसके पौधे को खेत की बाउण्डरी, बाड, खेत के मेड़ के पास अथवा सीधे खेत में लगाकर बागान भी विकसित किया जा सकता है।

खेती लगाने की विधि :–

इसके पौधे पौधशाला से प्राप्त किए जा सकते हैं जहां अनेक विकसित पौधे उपलब्ध होते है। इनमें एक पौधे को तैयार गढ्ढे में 1.5ग3.0 मीटर की दूरी (पौधे से पौधा) तथा पंक्ति से पंक्ति पर लगायें। पौध रोप से पूर्व गढ्ढे तैयार रखें और गढ्ढों में 5 कि.ग्रा. गोबर की खाद + 50 ग्राम डी.ए.पी. का भी प्रयोग करें। पौधों की रोपाई का उपयुक्त समय प्रथम बरसात पश्चात अथवा फरवरी का माह है परन्तु गढ्ढों की तैयारी पूर्व में ही कर लेनी चाहिए। यदि पौधे को बाउण्ड्री लाईन पर लगाते हो तो पौधे से पौधे की दूरी 2 मीटर रखें। इस प्रकार यदि खेती करते है तो प्रति हैक्टयर लगभग 2300 पौधे लगते है। इस खेत में जब तक पौधे छोटे है तब तक भिण्डी, उड़द, मूंग, अरहर आदि की खेती करना लाभप्रद है। परन्तु जब पौधें बडे हो जाए तो इस खेत में हल्दी, सूरन (जमीकन्द) अदरक, पिपरमिन्ट, सफेद मूसली, अरवी आदि की खेती करना लाभप्रद है। लगाए गये पौधों से 10 वर्ष पश्चात लकड़ी हेतु चयन किया जा सकता है। परन्तु 18–20 वर्ष के पौधे पूर्णरूपेण आर्थिक रूप से लाभदायक सिद्ध होते है।

पौध संरक्षण और सुरक्षा :–

इसके पौधें पर रोगों का कम परन्तु कीटों का आक्रमण होता है। खासकर अगस्त से मध्य अक्टूबर तक जब कम वर्षा हो रही हो ऐसी दशा में पत्ती खाने वाली सूंड़ी का भारी आक्रमण होता है जो पत्तियो में छेदकर जालीदार बना देती है जिससे पौधे की बढ़वार रूक जाती है। इसके नियंत्रण हेतु 2 मिली इण्डोसल्फान अथवा 1.5 मिली ट्राइजोफास प्रति ली. पानी में घोल बनाकर पावर स्प्रेयर से छिड़काव कर नियंत्रण पाया जा सकता है।

उपज व लाभ :–

यह एक महत्वपूर्ण इमारती लकड़ी है जिसकी बाजार मांग सर्वथा बनी रहती है। एक सागौन का पेड़ 16–22 वर्ष पश्चात लगभग 28–30 घनफुट लकड़ी देता है और वर्तमान में यह लगभग 1000–1800 रू. प्रति घनफुट है जिसे सामान्यत रू. 800–1000 माना जा सकता है। वैसे यदि प्रति पौधा देखा जाया तो 18–20 वर्ष का पेड़ अपनी कीमत 20–30 हजार रू. रखता है। सागवान का वृक्षारापेण लाभ के साथ–साथ पर्यावरण संतुलन में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान रखता है।

अपनों के रखवाले मसाले

गंगाराम और डॉ. एम एल जाखड़
पादप प्रजनन एवं आनुवांशिकी विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय,जोबनेर–303329
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर)

मसालों और कुछ विशिष्ट गुण, सुगंध और रंग वाल हर्ब्स के मेल से जायके का तड़का तो स्वाभाविक है, लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से उनके गुणों और प्रयोग की जानकारी विशेष लाभकारी सिद्ध हो सकती है। खासकर सर्दियों में कुछ मसालों का प्रयोग आपकी और आपके परिवार की सेहत को दुरूरत रख सकता है। अब तो भारतीय रसोइयों मं पारंपरिक मसालों के साथ कुछ विदेशी मसालों का भी प्रयोग किया जाने लगा है।

सौठ :– सर्वोत्तम वातनाशक औषधि मानी जाने वाली सौंठ अरूचि, मितली, भूख न लगने, अजीर्ण व पुराने कब्ज में लाभ देती है। रक्तशोधक होने के साथ सौंठ खांसी व श्वास रोगों में लाभकारी है। प्रोटिथीलिट एन्जाइम की प्रचुरता के कारण यह कफनाशी है। सौंठ शरीर का तापमान बढ़ाकर पसीने के माध्यम से विषैले तत्वों को शरीर से बाहर निकालती है।

प्रयोग :– वेजिटेबल ग्रेवी, करी, मेरिनेड और स्ट्यू में सौंठ के प्रयोग के अलावा सौंठ के लड्डू बदलते मौसम के प्रभाव से बचने के लिए इन दिनों बनाएं।

तेजपत्ता :– हल्के हरे रंग का सुगंधित लंबा तेज पत्ता या तेजपात स्वाद में तीखा और थोड़ा कड़वा होता है।

प्रयोग :– इसे पुलाव और कुछ सब्जियों में सिर्फ लेवर के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसे खाया नहीं जाता।

दालचीनी :– यह यकृत, अग्नाशय, आमाशय, पित्ताशय, गुर्दा और प्लीहा को पोषण प्रदान करती है। पाचन और रक्तसंचार में सहायक होती है। दस्त, मितली, उल्टी और मासिक धर्म में रूकावट का निराकरण करती है और रक्तशर्करा व कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करती है। दालचीनी, इसके वृक्ष की भूरे रंग की सुगन्धित छाल को सुखाकर तैयार की जाती है।

प्रयोग :– दालचीनी का प्रयोग विशेष रूप से पुलावा, बिरयानी, सूप, जूस, रायता और मांसाहारी व्यंजनों को लेवर देने के लिए करें।

अदरक :– यह गर्म होती है। रक्तसंचार के साथ पाचन, श्वसन व तंत्रिका तंत्र को प्रोत्साहित करती है। सर्दी–बुखार के साथ मिलती के लक्षण उभरने पर यह विशेष लाभकारी है। यह पेट के कीड़ों को भी नष्ट करती है।

प्रयोग :– चाय, सब्जी, अचार, सूप, तरोताजा करने वाले पेय और अन्य ठंडे–गर्म पेय पदार्थों में इसका इस्तेमाल करें।

जीरा :– तीखा और कसैला जीरा भारतीय पाक कला की जान है। यह पाचन तंत्र को मजबूत करता है, यकृत की कार्यप्रणाली सुधारता है। उदर संबंधी तकलीफों, पेट में दर्द, गैस, माइग्रेन और सिरदर्द में जीरा राहत देता है।

प्रयोग :– सब्जियों के साथ–साथ रायतों, मठरियों और रोटी–परांठा, पुलाव, सूप और शोरबे में भी इसका इस्तेमाल करें।

हल्दी :– इसे बीटा केरोटीन का सबसे बड़ा स्त्रोत माना जाता है। यह प्लीहा, अग्नाशय, यकृत और आमाशय को स्वास्थ्य प्रदान करती है, प्रतिरक्षी तंत्र को सुदृढ़ करती है, पाचन क्रिया सुधारती है और शरीर के किसी भी हिस्से में बनने वाली गांठ (सिस्ट) और पित्त पथरी को विलीन करने में सहायक हैं हल्दी जीवाणुओं से रक्षा करती है और रक्तशर्करा नियंत्रित करने में भी मदद कर सकती है।

प्रयोग :– सब्जी या अचार में तो इसका इस्तेमाल होता ही है, कच्ची हल्दी का प्रयोग दवा के रूप में होता है।

लौंग :–तीखी, कसैली और गर्म लौंग गुर्दों, प्लीहा, अग्नाशय और आमाशय को स्वस्थ रखती है, खाना पचाने में सहायक है और मितली, हिचकी व उल्टी से राहत देती है।

प्रयोग :– लौंग का प्रयोग शाकाहारी–मांसाहारी व्यंजनों, बिरयानी, अचार और मेरिनेशन में किया जाता है। गरम मसाला का यह प्रमुख अवयव है। लौंग के तेल के औषधीय गुणों के कारण ही दांत दर्द और मुंह की दुर्गंध दूर करने में भी इसका प्रयोग करते हैं। वैसे सर्दियों में आप लौंग को तवे पर भून कर फुला लें। इसे चूसें, सर्दी–जुकाम से बची रहेंगी।

राई या सरसों :– लाल–भूरे या काले रंग के ये छोटे गोल बीज आम तौर पर भारतीय व्यंजनों में प्रयुक्त होते है। इसमें काफी अधिक मात्रा में सेलेनियम पाया जाता है, जो अस्थमा, आर्थराइटिस और कैंसर जैसी बीमारियों से लड़ने में कारगर है। उत्तरी भारत में सर्दी के दिनों में मक्की की रोटी के साथ सरसों के पत्तों का साग भी काफी पसंद किया जाता है।

प्रयोग :– सब्जियों, दालों और अचार में तड़का लगाते समय ही राई या सरसों का प्रयोग विशेष रूप से लेवर के लिए करें।

छोटी इलायची :– भारतीय व्यंजनों में बहुधा प्रयुक्त छोटी इलायची, प्लीहा, अग्नाशय, आमाशय, फेफड़ें और गुर्दों पर अनुकूल प्रभाव डालती है, पाचन में सहायक है और अकड़ाहट या ऐंठन दूर करती है। बलगम काटने में असरदार होने के कारण यह फेफड़ों के लिए टॉनिक की तरह है। खांसी, सांस लेने में कठिनाई, मूत्रोत्सर्ग के समय जलन और बवासीर में छोटी इलायची के सेवन से आराम मिलता है।

प्रयोग :– मिठाइयों, शेक, जूस और वेजिटेबल करी में इसका प्रयोग करें।

मेथीदाना :– हल्के भूरे–पीले रंग का मेथीदाना कढ़ी और भारतीय अचारों का प्रमुख हिस्सा है। इनकी गंध तीखी और विशिष्ट होती है और इसीलिए भारतीय मसालों में इसका स्थान भी विशिष्ट है।

प्रयोग :– दक्षिण भारतीय पाक कला का यह महत्वपूर्ण भाग है और लापसी, दाल व चटनी में जरूर डाला जाता है। आप चाहें तो मेथीदाना को अंकुरित कर उसकी सब्जी भी बना सकती है।

काली मिर्च :– दुनिया के सभी देशों में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इस दृष्टि से मसालों का यह सर्वाधिक लोकप्रिय घटक है। अपने आरोग्यकारी गुणों के लिए मसालों में इसका स्थान सर्वोपरि है।

प्रयोग :– तीखे स्वाद के लिए काली मिर्च साबुत या गरम मसाले के रूप में प्रयोग में लेते हैं। इसे पुलाव में भी डाल सकती है। सूप की गार्निशिंग के लिए अक्सर इसे दरदरा पीसा जाता है।

जायफल :– पाचन संबंधी समस्याओं को दूर कर भूख बढ़ाने, पेट फूलने की प्रवृत्ति कम करने, मांसपेशियों की थकान दूर करने और दमा नियंत्रित करने में जायफल सहायक है।

प्रयोग :– औषधीय गुणों के कारण घरेलू उपचारों में तो इसका इस्तेमाल किया ही जाता है, जायफल का प्रयोग पुडिंग, कुकीज आदि के साथ खीर, हलवा, लस्सी, फ्रूट शेक, दूध, चीज सॉस और सूप में भी होता है।

अजवाइन :– रोजमर्रा की छोटी–छोटी शारीरिक तकलीफों जैसे अपच, पेट फूलना, मितली, एसिडिटी और पेट में दर्द आदि में काम आने वाली अजवाइन अपने गुणों के कारण घरेलू उपचार में सर्वाधिक प्रयुक्त होती है। इसमें पाए जाने वाले रसायन थाइमोल से आमाशय में पाचन क्रिया को तेज करने में मदद मिलती है। आमवात और आर्थराइटिस के कारण होने वाले दर्द में अजवाइन के प्रयोग से राहत मिलती है।

प्रयोग :– एक छोटा चम्मच अजवाइन एक कप पानी में, आधा पानी रहने तक उबाल लें। इसे छान कर पीने से पेट दर्द में तुरंत आराम मिलता है। एसिडिटी से राहत के लिए अजवाइन और जीरा एक–एक छोटा चम्मच लेकर एक गिलास पानी में उबालें और सुनहरा रंग आने पर छानकर पी लें। चपाती, सब्जियों, कढ़ी, सूप, जूस, अचार ओर लड्डू बनाने में भी अजवाइन का प्रयोग करें।

मंथन

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण की जब भी बात की जाती है, तब सिर्फ राजनीतिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण पर चर्चा होती है पर सामाजिक सशक्तिकरण की चर्चा नहीं होती ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता रहा है। उन्हें सिर्फ पुरुषों से ही नहीं बल्कि जातीय संरचना में भी सबसे पीछे रखा गया है। इन परिस्थितियों में उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करने की बात बेमानी लगती है, भले ही उन्हें कई कानूनी अधिकार मिल चुके हैं। महिलाओं का जब तक सामाजिक सशक्तिकरण नहीं होगा, तब तक वह अपने कानूनी अधिकारों का समुचित उपयोग नहीं कर सकेंगी. सामाजिक अधिकार या समानता एक जटिल प्रक्रिया है, कई प्रतिगामी ताकतें सामाजिक यथास्थितिवाद को बढ़ावा देती हैं और कभी-कभी तो वह सामाजिक विकास को पीछे धकेलती हैं।

प्रश्न यह है कि सामाजिक सशक्तिकरण का जरिया क्या हो सकती है? इसका जवाब बहुत ही सरल, पर लक्ष्य कठिन है। शिक्षा एक ऐसा कारगर हथियार है, जो सामाजिक विकास की गति को तेज करता है.

73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायती राज व्यवस्था के तहत निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों ने भी पिछले 10-15 वर्षों में शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य नहीं किया. सामान्य तौर पर ऐसा देखने में आया है कि पुरुष पंचायत प्रतिनिधियों ने निर्माण कार्यों पर जोर दिया क्योंकि इसमें भ्रष्टाचार की संभावनाएं होती हैं। शुरुआती दौर में महिला पंचायत प्रतिनिधियों ने भी कठपुतली की तरह पुरुषों के इशारे एवं दबाव में उनकी मर्जी के खिलाफ अलग कार्य नहीं किया। आज भी अधिकांश जगहों पर महिला पंच-सरपंच मुखर तो हुई हैं पर सामाजिक मुद्दों के प्रति उनमें अभी भी उदासीनता है। इसके बावजूद महिला पंचों एवं सरपंचों से ही सामाजिक मुद्दों पर कार्य करने की अपेक्षा की जा रही है क्योंकि सामाजिक सशक्तिकरण के लिहाज से यह उनके लिए भी जरूरी है।

हालाँकि महिला सशक्तीकरण के अनेक अन्य आयाम भी हैं। उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल तथा रोजगार में आनेवाली समस्याओं को दूर करना आवश्यक है। हालाँकि केवल कानून और सरकारी विनियमों से ही इन सामाजिक कमियों को दूर नहीं किया जा सकता। हमें समुचित जन-शिक्षा द्वारा समर्थन प्राप्त कर सुदृढ़ एवं अनवरत सामाजिक स्तर पर कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

ऋतु कपिल

(कार्यकारी संपादक)

भिण्डी की उन्नत खेती

डॉ. राकेश कुमार शर्मा -विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)

डॉ. स्वप्निल दुबे प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन

भिण्डी एक महत्वपूर्ण सब्जी फसल है, इसके फलों को पौधों से हरी, कच्ची एवं नर्म अवस्था में ही तोड़कर सब्जी के रूप में उपयोग लिया जाता है। भिण्डी गर्मी व वर्षा के मौसम की प्रमुख फसल है। गर्मी के मौसम में जब अन्य सब्जियों की कमी रहती है तब सब्जी आपूर्ती में भिण्डी का अच्छा योगदान रहता है तथा इन दिनों भिण्डी की कीमत भी अच्छी रहने से मुनाफा भी अच्छा मिल जाता है। किसान भिण्डी की अगेती बुवाई फरवरी माह में करके अच्छा लाभ ले सकते है। इसके जड़ व तनों के रस को चीनी उद्योग में गन्ने के रस को साफ करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है। आयुर्वेद में इसे यकृत में पथरी की बीमारी में फायदेमंद बताया गया है।

जलवायुः भिण्डी गर्मी एवं खरीफ की प्रमुख सब्जी फसल है। बीज के अंकुरण के लिए 17-22 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान उपयुक्त रहता है तथा बढ़वार के लिए ३५ डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान उपयुक्त रहता है। जब दिन का तापमान ४२ डिग्री सेन्टीग्रेड से अधिक हो जाता है तो फूल गिर जाते है या परागण की क्रिया नहीं होने से फलों में दाने नहीं बनते है।

भूमि: भिण्डी की खेती के लिये दोमट व बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. मान 6.0 - 6.8 हो तथा जीवांश की मात्रा पर्याप्त हो, उपयुक्त रहती है। सिंचाई की सुविधा तथा जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

उन्नत किस्में:

१. पूसा सावनी- इसके फल 10-15 से.मी. लम्बे, पतले, चिकने, गहरे हरे, पांच धारियों वाले होते है। वर्षा काल की अपेक्षा बसन्त में इनके पौधे से छोटे फल आते है।

2. पूसा ए-4 - पीतशिरा मोजेक के प्रति प्रतिरोधी किस्म है। फल गहरे हरे, 12-15 से.मी लम्बे तथा पहली तुडाई 45 दिन बाद होती है।

3. अर्का अनामिका - यह एक पीत षिरा मोजेक रोग प्रतिरोधी किस्म है । पौधे लम्बे, षाखाओं वाले, फल लम्बे, तथा गहरे हरे रंग के होते है। बुवाई के 45-5० दिन में फूल आना प्रारंभ हो जाते है।

४. वी.आर.ओ-६ - इसे काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है। पित शिरा विषाणु रोग से अवरोधी प्रजाती है पौधे की लम्बाई गर्मी में 130 से.मी. तथा बरसात में 175 से.मी. होती है तथा गांठे भी नजदीक होती है। गर्मी में पैदावार 135 क्विंटल है। तथा बरसात में 190 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।

५. वी.आर.ओ-10 - इसे काशी सातधारी के नाम से जाना जाता है। इसमें फूल 42 दिन में आ जाते है। यह प्रजाति पित शिरा मौजेक व प्रारम्भिक पत्ती मरोड़ विषाणु से पूर्णतया मुक्त है। इसकी पैदावार बरसात में 140 क्विं/हे. से भी ज्यादा ली जा सकती है।

6. वर्षा उपहार - पौधे मध्यम ऊँचाई (90-120 सेंटीमीटर) के होते है तथा पतियाँ गहरे हरे रंग की होती है। तने पर बहुत कम अन्तराल पर गाठें होती है। जिनमें 2-3 शाखाये निकलती है। फल चिकने, गहरे हरे रंग के, आकर्षक तथा 5 धारियों वाले होते है। यह किस्म पित शिरा विषाणु रोग के प्रति अवरोधी है। औसत उपज 98 क्विं/हें प्राप्त होती है।

अन्य किस्मों में पूसा मखमली, पंजाब पद्मिनी, परकिन्स ग्रीन, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, परभनी क्रान्ति तथा संकर किस्मों में डी.वी.आर-1, डी.वी.आर-2, डी.वी.आर-3, डी.वी.आर-4 आदि प्रमुख है।

बुवाई का समय - जायद की फसल हेतु फरवरी-मार्च तथा खरीफ की फसल हेतु जून-जुलाई का समय बुवाई के लिये उपयुक्त रहता है।

बीज की मात्रा - गर्मी की फसल हेतु 18-20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा वर्षा की फसल हेतु 8-10 किलोग्राम /हेक्टेयर बीज की आवष्यकता रहती है।

बुवाई की दूरी-

मौसम	लाइन से लाइन की दूरी	पौधे से पौधे की दूरी
जायद फसल हेतु	45 से.मी	30 से.मी
खरीफ फसल हेतु	60 से. मी.	30 से.मी

खेत की तैयारी - भिण्डी की बुवाई के लिये 20-25 से.मी. गहरी जुताई करनी चाहिये। बीज बुवाई के समय मिट्टी भुरभरी होनी चाहिये, जिससे बीजों का अंकुरण अच्छा हो सकें। खेत की तैयारी के समय २५ टन/हें गोबर की सड़ी खाद का उपयोग करें।

बुवाई की विधि - भिण्डी की बुवाई मेड़ या समतल भूमि पर दोनों तरीकों से कर सकते है। भारी मिट्टी में मेड़ों पर बुवाई करते है तथा बलुई दोमट भूमि में इसकी बुवाई समतल भूमि पर करते है। गर्मी के दिनों में अगेती फसल लेने के लिए बीज का 24 घण्टे तक पानी में भिगो कर एवं छाया में थोड़ी देर सुखा कर बुवाई करते है। बुवाई से पूर्व कार्बन्डेजिम 2.5-3.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित कर लेना चाहिये। बीज की बुवाई 2.5 - 3.0 सेमी. गहराई पर करते है।

खाद से उर्वरक - भिण्डी की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए मिट्टी में 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद, 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 60 किलोग्राम पोटाष प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए। गोबर की खाद खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिला दें। नाईट्रोजन की एक तिहाई मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाष की पूरी मात्रा बुवाई के पहले मिट्टी में मिलाना चाहिए। नत्रजन की षेष मात्रा बुवाई के 30 -50 दिन बाद फसल में टापड्रेसिंग के रूप में दें।

सिंचाई - बुवाई के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहियें । इस हेतु बुवाई से पहले पलेवा कर लेना चाहिए। अच्छी फसल हेतु मौसम एवं मिट्टी के प्रकार के अनुसार आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। मार्च में 10-12 दिन अप्रैल में 7-8 दिन और मई- जून में 4-5 दिन के अंतर पर सिंचाई करें। वर्षा में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा जल निकास की व्यवस्था भी करें ।

अन्त सस्य क्रियायें- भिण्डी की फसल के विकास एवं बढ़वार पर खरपतवार प्रतिकूल प्रभाव डालते है। प्रभावी खरपतवार नियंत्रण हेतु ड्यूअल (मेटालेक्लोर -50 ई.सी) की 2 लीटर मात्रा या स्टाम्प (पेन्डामेथलीन 30 ई.सी) की 3.3 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के २४ घंटे के अन्दर छिड़काव करने से खरपतवार नष्ट हो जाते है। इसके बाद आवष्यकतानुसार निदाई-गुड़ाई करते रहना चाहिये।

फलों की तुड़ाई और उपज- भिण्डी की तुडाई समय पर नरम अवस्था में करनी चाहिये, क्योंकि कड़ा होने पर उसमें रेषे की मात्रा बढ़ जाती है। फलों की तुड़ाई फूल खिलने के 4-5 दिन बाद की जाती है तथा तुड़ाई ३-४ दिन के अन्दर पर करते रहना चाहिये। उचित देख-रेख, उन्नतशील किस्म का उपयोग, खाद एवं उर्वरकों के उचित प्रयोग से गर्मी में 8-10 टन/हें तथा बरसात में 12-15 टन/हें उपज प्राप्त की जा सकती है।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

1. पित षिरा मौजेक तथा पर्ण कुन्चन- विषाणु रोग है जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। पत्तियों की नसे पीली पड़ जाती है, तथा पौधे की बढ़वार रूक जाती है। हरा भाग छिछले गडढ़ों का रूप ले लेता है। पत्तियों की किनारे नीचे झुक जाते है। तथा कटे हुए से हो जाते है।

नियंत्रण

रोग रोधी किस्मों का प्रयोग करें ।

बीज को इमिडाम्लोप्रिड (2.5 मिली /किलो बीज) से शोधित करके लगाये।

कान्फीडोर 200 एस.एल (2 मिली/लीटर पानी की दर से) रोपाई से २० दिन बाद तथा आवश्यकतानुसार १५ दिन के अन्तराल पर प्रयोग करें।

२.चूर्णा फंफूद रोग- इस बीमारी का प्रकोप होने पर पत्तियों पर गहरे भूरें रंग का चूर्ण बन जाता है, जिससे पत्तियां सिकुड़ कर सूख जाती है। इसकी रोकथाम हेतु कार्बन्डाजिम १ ग्राम /लीटर या घुलनषील गंधन 3 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

1.फली तथा तना छेदक - इस कीट की इल्लियां (लारवा) फलों में छेद करके बीज को हानि पहुचाता है। तथा तने के शीर्ष भाग को नुकसान करती है। शीर्ष भाग मुरझा जाता है तथा पौधे की बढ़वार रूक जाती है।

विधि नियंत्रण - साइपरमेथ्रीन 10 ई.सी. का 0.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

2. सफेद मक्खी, जैसिड- पत्तियों का रस चुसने से पत्तियों सिकुड़ जाती है। पीतशिरा रोग को फैलाना में सहायक है।

नियंत्रण - डायमिथीएट 30 ई.सी 1 मिली/लीटर या कांफिडोर 0.3 मिली/लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

3. भिण्डी की लाल माइट- गर्मी वाली भिण्डी में यह बहुत हानिकारक है। शिशु तथा प्रोढ़ पत्यिों के निचली सतह पर रस चूसते है। रस चूसने से पत्तियों की उपरी सतह पर पीली पतियाँ उभर आती है तथा पतियाँ सूख जाती है।

नियंत्रण - डाइकोफाल का 2.5 मिली/लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

(पाक्षिक राशि फल)

16–02–2014 से

28–02–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	पिछले समय से चल रही समस्याओं का अंत ,पद्प्रतिष्ठा,प्राप्ति योग,
BKT	प्रयत्नों से लाभ,मन सम्मान में वृद्धि,आर्थिक लाभ,
CLU	धन लाभ , प्रतिष्ठा,तथा शुभ फल प्रप्ति योग,
DMV	परेशानियो में निम्नता,धीरे धीरे प्रयत्नों से लाभ,
NEW	परेशानियो का अंत धन लाभ , व्यापार लाभ
FOX	धन लाभ , भूमि लाभ,प्रतिष्ठा में वृद्धि!
GPY	धन लाभ भूमि लाभ आंशिक राहत का समय!
HQZ	व्यापार लाभ, पिछले समय से चल रही बाधाओं का अंत !
IR	यात्रा योग,अधिकारियों द्वारा परेशानी,प्रतिष्ठा चिन्ता !

गुलाब की आर्गनिक जैविक उन्नत खेती, फूल वाले पौधे

यद्धपि इसके फूल साल भर प्राप्त होते है लेकिन जाड़े की ऋतु में उच्च गुणवत्ता वाले एवं आकार में बड़े पुष्प प्राप्त होते है इसके फूलने का मुख्य समय मार्च माह है लेकिन कम तापमान होने पर अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक अधिक संख्या में फूल आते रहते है फूलों की उत्तम पैदावार के लिए प्रचुर मात्रा में धुप व आर्द्रता वाली जलवायु उपयुक्त रहती है।

उचित व्यवस्था करके गुलाब की खेती सभी प्रकार की भूमियों में भली-भांति की जा सकती है लेकिन उचित जल निकास युक्त जीवांश पदार्थों की धनी बलुई दोमट से दोमट भूमि , जिसका पी.एच. मान 6-7.5 गहरी जुताइयां करके पाटा लगाकर तैयार कर लेना चाहिए।

खेत की जुताई के बाद तैयार करके क्यारियों में विभक्त कर लेते है फिर मई-जून माह में 50-60 से.मि. गहरे गड्ढों की उचित दुरी पर खुदाई करके 10-12 दिन के लिए खुला छोड़ देते है जिससे मिटटी में उपस्थित कीड़े-मकोडे फफूंदी व खरपतवार इत्यादि नष्ट हो जाते है 10-12 दिन बाद इन गड्ढों में 25-30 से. मि. की मोटाई में गोबर की खाद डालकर उसके बाद ऊपर से बाहर निकाली हुई मिटटी को पुन: भर देना चाहिए सबसे ऊपर की 10-15 से.मि. मोटी पर्त में पुन: गोबर की खाद डालकर गुड़ाई कर देते है इसके बाद तैयार गड्ढों में पौधों को रोपित कर देते है ।

गुलाब की किस्मों को निम्न 5 वर्गों में विभक्त किया जाता है -

हाईब्रिड टी :-

यह बड़े फूलों वाला महत्वपूर्ण वर्ग है इस वर्ग के पौधे झाड़ीनुमा लम्बे होते है इनकी विशेषता यह है की प्रत्येक शाखा पर एक फूल निकलता है जो अत्यंत सुन्दर होता है हालाँकि कुछ ऐसी किस्मे भी है जिनमे छोटे समूह में भी फूल आगते है अधिक पाला पड़ने की स्थिति में कभी-कभी पौधे मर जाते है इस वर्ग की प्रमुख किस्मे है एम्बेसडर अमेरिकन प्राइड , बरांडा , डबल, डिलाईट, फ्रेंडशिप , सुपरस्टार , रक्त गंधा , क्रिमसनग्लोरी, अर्जुन, फस्टे रेड, रक्तिमा , और ग्रांडेमाला आदि

फ्लोरीबंडा :-

इस वर्ग में आने वाली किस्मों के फूल हाइब्रिड टी किस्मों की तुलना में छोटे होते है और अधिक संख्या में कम लगते है इस वर्ग की प्रमुख किस्मे है - जम्बरा अरेबियन नाइट्स, रम्बा वर्ग , चरिया, आइसवर्ग, फर्स्ट एडिसन , लहर, बंजारन , जन्तर-मंतर , सदाबहार , प्रेमा और अरुनिमा आदि.

पोलिएन्था :-

इस वर्ग में आने वाली किस्मों के पौधे और फूलों का आकार हाइब्रिड डी एवं फ्लोरिबंडा वर्ग से छोटा होता है लेकिन गुच्छा आकार में फ्लोरी बंडा वर्ग से भी बड़ा होता है जैसे - चट्टीलौन व ईको आदि छोटे आते है जो गुच्छों में लगते है एक गुच्छों में कई फूल होते है .

सुवचार

आप जितनी ज्यादा जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार रहते हैं, उतने ही अधिक लोगों के विश्वसनीय बनते हैं।

-पीट मेराविच

उन सभी कारणों को भूल जाएं कि कोई कार्य नहीं होगा आपको केवल एक अच्छा कारण खोजना है कि यह कार्य सफल होगा।

- डॉ. राबर्ट

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेखों में समाविष्ट सभी बातों की जाँच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अत: हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

शेखावटी उत्सव 2014 का शुभारंभ

नवलगढ़ राजस्थानी कला, संस्कशति की अनुपम छटा बिखेरने वाल 19 वें शेखावटी उत्सव 2014 का नवलगढ़ स्थित सूर्यमंडल मैदान में भव्य आतिशबाजी और रंगारंग कार्यक्रमों के साथ शुभारंभ हुआ। तीन दिन तक चलने वाले उत्सव का आयोजन राजस्थान पर्यटन विभाग, झुंझुनू जिला प्रशासन एवं मोरारका फाउन्डेशन के संयुक्त तत्वाधान में किया जा रहा है। शेखावाटी उत्सव 2014 का उद्घाटन सूर्य मण्डल मैदान में झुन्झुनू कलेक्टर डॉ. आरूशी मलिक के करकमलों द्वारा ढप बजाकर किया कया। समारोह की सम्मानीय अतिथियों में श्री फेलिक्स रोनाल्ड, बीडी मैनेजर, जी.आई.जेड. साउदी अरब और नादिन ल. प्रिंस, फ्रेंच-इण्डियन कल्चर सेंटर, फतेहपुर शेखावाटी, उपस्थित रहे। डॉ. आरूशी मलिक ने कहा कि फाउन्डेशन ने किसानो के लिए जो मूहिम चलाई है वो प्रंशसनीय है। ऑर्गेनिक खेती में खर्चा कम आता है और पैदावार ज्यादा होती है। किसानों को आत्म निर्भर बनाने के लिए फाउन्डेशन द्वारा किये जा रहे कार्य मील के पत्थर साबित हो रहे है वहीं किसानों को भी जैविक उत्पादों के बेहतर दाम मिल रहे है। श्री कमल मोरारका ने कहा कि लगातार 19 साल से इस उत्सव के कारण सांसकशतिक जुडाव बढा है, इस उत्सव ने शेखावटी का एक नई पहचान दी है।

किसानों की फसलों की तारबंदी कार्य को नरेगा में शामिल करने के लिए केंद्र को प्रस्ताव-कृषि मंत्री

जयपुर कृषि मंत्री श्री प्रभूलाल सैनी ने राज्य विधानसभा में बताया कि किसानों की फसलों की जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए ''फेन्सिंग'' व तारबन्दी के कार्य को नरेगा योजना में शामिल करने के लिए केन्द्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया हैं।

श्री सैनी ने शून्यकाल में इस संबंध में उठाये गये मुद्दे पर हस्तक्षेप करते हुए बताया कि फसलों केतारबंदी कार्य को नरेगा योजना की गाइडलाइन्स के तहत ही कराया जाना प्रस्तावित है। इसमें किसान द्वारा अपने हिस्से की राशि दी जायेगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि जल्दी ही इस पर कार्यवाही की जायेगी. कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने राज्य विधानसभा में आश्वस्त किया कि अधिक प्रीमियम के कारण जिन जिलों को मौसम आधारित बीमा योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है उन्हें संशोधित किया उन्हें संशोधित बीमा योजना में शामिल कर लाभान्वित करने का प्रयास किया जाये।

श्री सैनी ने शून्य काल में इस सज़्बन्ध में उठाये ये मुद्दे में हस्तक्षेप करते हुए कहा कि मौसम आधारित फसल बीमा योजना के तहत राज्य के 21 जिले आते हैं। उन्होंने कहा कि मुज़्यमंत्री ने निर्देश दिये हैं कि जिन जिलों से प्रिमियम ज़्यादा आता है और इस कारण उन्हें लाभ नहीं मिल पा रहा है। ऐसे जिलों का परीक्षण करवाया जाये।उन्होंने कहा कि मौसम आधारित फसल बीमा योजना के बारे में प्रीमियम बढाने का फैसला भारत सरकार द्वारा लिया गया है। इस सज़्बन्ध में एक नवज़्बर,2013 को भारत सरकार ने एक परिपत्र जारी कर प्रीमियम को 4.8 प्रतिशत किया है।

कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर (नाम परिवर्तन) विधेयक-2014 ध्वनिमत से पारित

जयपुर, विधानसभा ने कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर (नाम परिवर्तन) विधेयक 2014 को ध्वनिमत से पारित कर दिया।

कृषि मंत्री श्री प्रभूलाल सैनी ने सदन में विधेयक को प्रस्तुत किया। उन्होंने विधेयक लाने के कारणों एवं उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया कि महाविद्यालय जोबनेर के लिए 7 जुलाई,1947 को स्व. कर्ण नरेन्द्र सिंह ने दो हजार एक सौ एकड़ भूमि दान की और इस महाविद्यालय का नाम उनके नाम से रखा श्री सैनी ने कहा कि स्व. श्री करण नरेन्द्र की स्मृति में कृषि विश्वविद्यालय जोबनरे का नाम परिवर्तन कर इनका नाम श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर रखने के लिए उनको शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, राजनैतिक नेताओं एवं सामाजिक संगठनों से आवेदन प्राप्त हुए थे।

उन्होंने स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय जिस भूमि पर है यह भूमि उनके द्वारा दान की गई थी इसलिए विश्वविद्यालय का नाम श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर किया जा रहा है।

यमुना जल में राजस्थान का आवंटित हिस्सा मांगा, श्रीमती वसुन्धरा राजे

जयपुर, श्रीमती वसुन्धरा राजे ने यमुना नदी के पानी में राजस्थान का आवंटित हिस्सा दिलवाने के लिये केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद से पत्र लिखकर सकारात्मक हस्तक्षेप का आग्रह किया है।

श्रीमती राजे ने लिखा है कि यमुना के दोनों हेडवर्क्स ताजेवाला और ओखला से राजस्थान के हिस्से का पानी हरियाणा उपयो में ले रहा है। यमुना जल समझौते के 20 साल बाद भी राजस्थान को उसका पानी नहीं मिल रहा है। अपर यमुना रिवर बोर्ड के आंकड़ों से स्पष्ट है कि राजस्थान को यमुना जल में उसके 9 प्रतिशत हिस्से में से मात्र 1 प्रतिशत ही उपलज़्ध कराया जा रहा है। दूसरी तरफ, हरियाणा 48 प्रतिशत आवंटित हिस्से की बजाय 69 प्रतिशत पानी का उपयो कर रहा है।

पत्र के अनुसार, 21 दिसज़्बर.2001 को आयोजित बोर्ड की बैठक में ताजेवाला हेडवर्क्स से 1917 ज़्यूसेक और ओखला से 1281 ज़्यूसेक पानी राजस्थान को आवंटित हुआ था। अपर यमुना रिव्यू कमेटी ने इस निर्णय की समीक्षा के लिये 2006 में एक इज़्पावर्ड कमेटी ठित की थी। कमेटी ने केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय को 2007 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में राजस्थान के हक को सही माना है। यह पानी मुज़्य रूप से प्रदेश के चूरू, झुंझुनूं व निकटवर्ती क्षेत्रों के लिए है।

किसानों की मेहनत से तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता संभव-डॉ. जे.एस.सन्धु

भरतपुर, राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विशेष स्थान है। देश में वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है यह बात भारत सरकार के कृषि आयुक्त डॉ. जे. एस. सन्धु ने भरतपुर जिले के उँचागाँव में कृषि एवं सहकारिता विभाग, नई दिल्ली एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय के संयुक्त संस्थागत सम्पर्क कार्यक्रम के अर्न्तगत आयोजित किसान मेलें में किसानों को सम्बोधित करते हुए कही। इस अवसर पर प्रख्यात पादप रोग वैज्ञानिक डॉ. पी.आर. वर्मा ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कृषि उत्पादन को कीट एवं रोग काफी नुकसान पहुँचाते हैं इसलिए रोगों एवं कीटों को पहचान कर समय पर उनका नियंत्रण करें जिससे इनसे फसल में होने वाली हानि से बचा जा सके। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि देश में सरसों उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन निदेशालय के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने किया।

राजस्थान माल विधेयक, 2014 ध्वनि मत से पारित

जयपुर,विधानसभा ने राजस्थान माल (उत्पादन, प्रदाय वितरण और व्यापार और वाणिज़्य का नियंत्रण) विधेयक, 2014 ध्वनि मत से पारित कर दिया। खाद्य एवं नारिक आपूर्ति मंत्री श्री हेम सिंह भडाना ने विधेयक को सदन में प्रस्तुत किया और विधेयक लाने के पीछे के कारणों एवं उद्देश्यों की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि यह विधेयक आम जनता के हितों एवं सुशासन के लिए लाया या है। उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से सरकार द्वारा उन वस्तुओं की कीमतों पर नियंत्रण किया जा सके , जिनकी बाजार में कीमतें बहुत हैं ताकि आम उपभोक्ता भी उनका उपयो कर सके।

आम लोगों की समस्याओं का समाधान पहली प्राथमिकता :कृषि और पशुपालन मंत्री

जयपुर, कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि हिंदुस्तान में राजस्थान पहला राज्य है, जहां सरकार जनता से उनके घर जाकर उनकी समस्याओं के बारे में पूछ रही है और उनका समाधान कर रही है। जनसेवा यात्रा के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए श्री सैनी ने कहा कि श्रीमती वसुंधराज राजे की मंशा है कि प्रदेश के हर आम आदमी के चेहरे पर मुस्कान हो, इसलिए आम लोगों की समस्या का सामधान करना हमारी पहली प्राथमिकता है।

श्री सैनी ने यह बात जनसेवा यात्रा के दूसरे दिन सवाईमाधोपुर जिले की बौंली पंचायत समिति के विभिन्न ाम पंचायत मुज़्यालयों पर हुई जनसुनवाई के दौरान कही। उन्होंने कहा कि यह कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है बल्कि आम जनता का कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि सरकार बहुत सारी योजनाएं बनाती है, लेकिन उनका लाभ आम गरीबों को नहीं मिलता है।

डेयरी शो हैदराबाद इन्टरनेशनल में सृष्टी एग्रो

हैदराबाद .. डेयरी शो हैदराबाद इन्टरनेशनल सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. सृष्टी एग्रो ने डेयरी शो हैदराबाद इन्टरनेशनल मेंभाग लिया

SSARDAR-G Gold
(Amino Acid 15%,Nitrobenzene 18%, Humic Acid 10%)
SSardar G Gold Granules use for All Crops
लैण्डक्रूजर
LANDKRUSHIER
Content : 25 Types of Amino Acid + Alge + Solvent
A Balanced Systemic Bio Stimulant
MICRO NUTRIENT LIQUID MIXTURE
SrushtiAllcrops
Srushti Allcrops- Is a partially chelated & well balanced micro-nutrient mixture used for all type of crops,vegetable & horticulture.
SURAKSHA
SYSTEMATIC FUNGICIDE
FOR FOLIAR SPRAY
Contents : Phosphoric Acid 32% + Copper EDTA 8%
+ Emulsifier & Solvent 60%
Hindchem Corporation
307, Linkway Estate, New Link Road, Malade (W), Mumbai-400064
Website : www.hindchem.com
Customer Care No. 0141-3130277
हमारा अरमान खुशहाल किसान

विज्ञापन हेतु संपर्क करें
ममता (मुम्बई) 08898600347
गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599
महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863
जयदीप माथुर (गुड़गाँव) 09928960900
दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778

राष्ट्रीय डेरी मेला
(25-27 फरवरी, 2014)
nDri
मेला स्थल : प्रदर्शनी मैदान
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल
डॉ. डी.के. गोसांई 9215757800
डॉ. गोपाल सांखला 9416952786
डॉ. बी. एस. मीणा 9466242194
डॉ. पी.एस. ऑबराय 9729580277
E-mail: dairymela@gmail.com, gosaindk@yahoo.com
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल -132 001 (हरियाणा)

कच्छ नहीं देखा, तो कुछ नहीं देखा
6th
MEGA AGRI SHOW
Janmabhoomi group of Newspaper
KUTCHMITRA
Hi-Tech
AGRI FAIR
कृषि मेला
Date : 1 To 4 March 2014
Venue : BHUJ-KUTCH(GUJRAT)
Stall Booking
NATIONAL RESEARCH & MANAGEMENT INSTITUTE
204, ARIHANT CHAMBER, NR. PNB BANK, STATION ROAD, BHUJ-KUTCH GUJARAT
MAIL : vavetar@gmail.com / nrmi1313@gmail.com www.hitechagrifair.com
9408529283 /9712558961/9408529273
Organised
Media Partner
Hindi & Gujarati Edition

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Cell**-9321758550,**Email:info@srushtiagronews.com**, **website:www.srushtiagronews.com**. **RNI No.MAHHIN/2013/49425**